हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार 1 फरवरी 2026

तापमान
अधिकतम 21.0 डिग्री
न्यूनतम 7.0 डिग्री

12 मुरथल विवि में रजिस्ट्रार की नियुक्ति अटके कार्य पूरे होने से मिलेगी राहत

12 आरपीएफ कर्मियों ने रेल लाइन के साथ लगती कॉलोनियों के पास युवाओं को किया जागरूक

खबर संक्षेप

अवैध निर्माणों को किया गया ध्वस्त

खरखौदा। जिला नगर योजनाकार की ईन्फोर्समेंट टीम द्वारा खरखौदा के खांड़ा बाईपास पर रोहतक रोड़ के साथ लगती लगभग 6 एकड़ व गोपालपुर अंडरपास के पास लगभग 3 एकड़ में बनी अवैध कालोनियों में 10 डीपीसी व कच्चे मार्गो को ध्वस्त किया गया। डीटीपी ने कहा कि किसी भी जगह अवैध कॉलोनी के निर्माण की अनुमति नहीं है। जिला नगर योजनाकार विभाग द्वारा सभी क्षेत्रों पर सख्त निगरानी रखी जा रही है, यदि कोई व्यक्ति अवैध कॉलोनी विकसित करता पाया गया, तो उसके विरुद्ध एफआईआर दर्ज करवाई जाएगी।

अवैध हथियार सहित आरोपित गिरफ्तार

गोहाना। क्राइम यूनिट गोहाना की पुलिस टीम ने एक आरोपित को अवैध हथियार सहित गिरफ्तार किया है। आरोपित गांव मोई माजरी निवासी संदीप पुत्र रणबीर है। पुलिस ने आरोपित को न्यायालय में पेश करके उसे आदेश पर उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर 31 जनवरी को उक्त आरोपित को शहर में किसान कालोनी के पास नाकाबंदी करके अवैध हथियार सहित गिरफ्तार कर लिया। पुलिस द्वारा तलाशी लिए जाने पर उनकी पैन्ट से एक देशी पिस्तौल व एक जिन्दा रौन्द बरामद हुआ।

ठेके से रुपये लूटने के मामले में आरोपित काबू

सोनीपत। थाना कुंडली पुलिस ने शराब के ठेके पर सैल्समैन से मारपीट कर नकदी लूटने की घटना में संलिप्त आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित नितीश निवासी बिहार हाल बरोटा जिला सोनीपत बताया गया है। पुलिस के अनुसार 22 जनवरी 2026 को मनोज निवासी टिकरी ने शिकायत दी थी कि वह सुबह बरोटा बाजार स्थित ठेके पर कैश लेने पहुंचा तो ठेका बंद मिला। अंदर जाने पर सैल्समैन साहब सिंह के सिर और माथे पर गंभीर चोटें थीं।

हमला करने की घटना में सहायक आरोपित काबू

सोनीपत। थाना राई पुलिस ने फायर कर जानलेवा हमला करने की घटना में आरोपियों की सहायता करने वाले एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित सुंदर निवासी जठेड़ी जिला सोनीपत है। पुलिस के अनुसार 26 जनवरी को अशोक उर्फ भूरा निवासी जठेड़ी ने शिकायत दी थी कि वह ट्रैक्टर से खेत से घर लौट रहा था। रास्ते में मोटरसाइकिल पर सवार दो लोगों ने ट्रैक्टर के सामने वाहन रोक दिया।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश

सभी राजकीय व प्राइवेट स्कूलों में छात्राओं को नि:शुल्क सैनेटरी पैड मुहैया करवाना करें सुनिश्चित

जिले के 44 राजकीय विद्यालयों में लगी हैं सैनेटरी पैड की मशीनें, आधी से ज्यादा ठप

18 स्कूलों में सुचारू रूप से चल रही हैं मशीनें, 26 काफी समय से नहीं कर रही काम, रेलवे स्टेशन पर भी नहीं मिल रही सुविधा, मुसीबत के समय महिलाओं और बच्चियों को उठानी पड़ती है परेशानी

स्कूलों में नोडल अधिकारी छात्राओं को बांट रहे सैनेटरी पैड

रविंद्र ठाकुर ▸▸| सोनीपत

हरिभूमि पड़ताल

जिला के राजकीय व प्राइवेट स्कूलों में छात्राओं को हर माह महिला स्टाफ की ओर से सैनेटरी पैड मुहैया करवाए जा रहे हैं, जबकि सार्वजनिक स्थानों की बात करें तो नागरिक अस्पताल, बस अड्डा परिसर, अधिकतर आंगनबाड़ी केंद्रों पर बने शौचालयों में सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनों की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। जिला में कुल 709 राजकीय विद्यालयों, जबकि 216 प्राइवेट स्कूलों का संचालन किया जा रहा है। शिक्षा विभाग के नेतृत्व में संचालित 77 राजकीय उच्च, 75 राजकीय माध्यमिक, 135 राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक, एक केंद्रीय विद्यालय व एक नवोदय विद्यालय शामिल हैं। स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से दो साल पहले 44 राजकीय विद्यालयों में सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनें लगाई गई थी। इनमें से 18 स्कूलों में मशीनें सुचारू रूप से चल रही हैं, जबकि 26 मशीनें समय के साथ ठप हो गई है। ऐसी स्थिति में सभी स्कूलों में महिला नोडल अधिकारी छात्राओं को सैनेटरी पैड मुहैया करवा रही हैं। वहीं रेलवे स्टेशन की बात करें तो यहां महिला शौचालय में सैनेटरी पैड की मशीन लगाई गई, जबकि वह कार्यरत नहीं है। ऐसे में इन सभी जगहों पर सैनेटरी पैड संबंधी व्यवस्था का अभाव है। ऐसे में मुसीबत के समय महिलाओं का परेशान होना लाजिमी है, लेकिन इस स्थिति के सुधार के लिए खड़ा होने को कोई तैयार नहीं है। वहीं स्कूलों में हर माह विशेष कार्यशाला आयोजित कर छात्राओं को मासिक धर्म संबंधी जानकारी देकर जागरूक किया जा रहा है।

सर्वोच्च न्यायालय ने दो दिन पहले ही सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेश सरकारों को निर्देश जारी किया है कि वह सभी राजकीय व प्राइवेट स्कूलों में छात्राओं को निशुल्क सैनेटरी पैड मुहैया करवाना सुनिश्चित करें। साथ ही सभी स्कूलों में लड़के-लड़कियों व दिव्यांगों के लिए अलग-अलग शौचालयों की व्यवस्था करने के निर्देश भी दिए गए हैं। सर्वोच्च न्यायालय का कहना है कि मासिक धर्म स्वास्थ्य का अधिकार संविधान में दिए गए जीवन के मौलिक अधिकार का हिस्सा है। बुनियादी सुविधाओं की कमी व मासिक धर्म से जुड़े सामाजिक कलंक का लड़कियों के स्वास्थ्य, शिक्षा व निजता पर सीधा असर पड़ता है।

सोनीपत। नागरिक अस्पताल परिसर में अलग से बनाए गए महिला शौचालय परिसर के बाहर खड़ी महिलाएं व स्टेशन पर महिला शौचालय में खराब हालत में लगी सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीन।

लापरवाही पर खोनी पड़ सकती है मान्यता

सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि महिलाओं के लिए सार्वजनिक स्थानों के साथ स्कूलों में भी छात्राओं के लिए अलग से शौचालयों का निर्माण करवाना आवश्यक है। इसके अलावा छात्राओं को निशुल्क सैनेटरी पैड मुहैया करवाना जरूरी है। न्यायालय ने चेताया है कि अगर स्कूल प्रबंधन छात्राओं व महिला स्टाफ सदस्यों के लिए अलग शौचालयों का निर्माण करवाने या सैनेटरी पैड देने में विफल रहते हैं, तो उनकी मान्यता को रद्द कर दिया जाए।

जल्द मशीन को दुरुस्त कराएंगे

सोनीपत स्टेशन परिसर के निर्माणाधीन भवन में महिलाओं, पुरुषों व दिव्यांगजन के लिए अलग-अलग शौचालय की व्यवस्था की जा रही है। फिलहाल पुरुष व महिलाओं के लिए प्लेटफार्म नंबर 1 पर अलग-अलग शौचालयों की व्यवस्था पहले से ही की गई है। अगर शौचालय में सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीन काम नहीं कर रही है तो जल्द संबंधित कर्मचारी से मशीन को दुरुस्त करवाया जाएगा।

-हिमांशु शेखर उपाध्याय, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, उत्तर रेलवे

सरकार ने 2 वर्ष पहले बनाई थी योजना

प्रदेश सरकार ने स्कूलों के साथ बस अड्डा, नागरिक अस्पताल जैसे सार्वजनिक स्थानों व आंगनबाड़ी केंद्रों पर सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनें लगवाने के लिए करीब 2 वर्ष पहले योजना तैयार की थी। अब हालात यह है कि संबंधित अधिकारी योजना पर दो कदम भी नहीं चल पाए हैं। यही कारण है कि नागरिक अस्पताल, बस अड्डा परिसर, अधिकतर आंगनबाड़ी केंद्रों के साथ अधिकतर स्कूलों में सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनें नहीं लगी है। जिन शौचालयों में मशीनें लगवाई गई थी, वहां से मशीनें आज गायब हो चुकी हैं। अधिकारी यहां सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनों की व्यवस्था करने में असमर्थ हैं।

खराब मशीनों को जल्द कराएंगे ठीक

प्रत्येक स्कूल में छात्राओं को सैनेटरी पैड वितरण के लिए स्पेशल महिला नोडल अधिकारी को नियुक्त किया गया है। इनका उद्देश्य अपने-अपने स्कूलों में छात्राओं को सैनेटरी पैड मुहैया करवाने के साथ उनमें जागरूकता लाना भी है। 2 वर्ष पहले 44 विद्यालयों में सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनें लगवाई गई थी, इसमें से कुछ खराब हो चुकी है, जिन्हें जल्द सुचारू करवाया जाएगा।

-नवीन गुलिया, जिला शिक्षा अधिकारी, सोनीपत

आदेश मिलते ही शौचालयों में लगेंगी मशीनें

बस अड्डा परिसर में पुरुष व महिलाओं के लिए अलग-अलग शौचालयों की व्यवस्था की गई है। फिलहाल विभाग की ओर से महिला शौचालय में सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीन लगवाने कोई आदेश नहीं मिले हैं। अगर उच्च अधिकारियों की ओर से आदेश जारी होते हैं तो जल्द महिला शौचालयों में यह व्यवस्था लागू करवाई जाएगी।

-संजय कुमार, महाप्रबंधक, रोडवेज विभाग, सोनीपत

शौचालय में चल रहा मरम्मत का कार्य

नागरिक अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले मरीजों व उनके परिजनों की सुविधा के लिए अलग-अलग पुरुष व महिला शौचालय बनवाए गए हैं। फिलहाल अस्पताल के एक शौचालय परिसर में मरम्मत का कार्य करवाया जा रहा है। कार्य पूर्ण होने के बाद उच्च अधिकारियों के आदेश पर महिला शौचालय में सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीन लगवाई जाएगी।

-डॉ आदित्य, डीएमएस, नागरिक अस्पताल, सोनीपत

कॉइन सिस्टम खत्म कर सीधी प्रक्रिया को तवज्जो

सरकार व सामाजिक संस्थाओं की ओर से सीधे तौर पर प्रत्येक स्कूल में 3 माह का भिजवाया जा रहा है। स्कूलों में लगी सैनेटरी पैड वेंडिंग मशीनों में कॉइन सिस्टम के जरिये सैनेटरी पैड निकलने की व्यवस्था की गई है, लेकिन प्रबंधन ने कॉइन सिस्टम खत्म करने के लिए छात्राओं को सीधे तौर पर पैड मुहैया करवाना सुनिश्चित किया है। ऐसे में हर माह प्रत्येक छात्रा को 5 से 6 सैनेटरी पैड मुहैया करवाए जा रहे हैं। इसी के तहत छात्राओं को हर माह कार्यशालाओं के माध्यम से जागरूक भी किया जा रहा है। साथ ही मशीनों का प्रयोग केवल सैनेटरी पैड डिस्ट्रोय अर्थात खत्म करने के लिए किया जा रहा है।

पंचायत भूमि पर कब्जे के मामले में बीडीपीओ ने जांच के दिए आदेश

- ग्रामीण बोले, पंचायत भूमि को करवाया जाए कब्जा मुक्त

हरिभूमि न्यूज ▸▸| गन्नौर

अगवानपुर गांव में पंचायत भूमि पर अवैध कब्जे और निर्माण के आरोपों के बाद प्रशासन ने मामले में संज्ञान लिया है। ग्रामीणों की शिकायत पर खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी (बीडीपीओ) ने पंचायत सचिव को जांच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के आदेश दिए हैं। जांच के दौरान पंचायत भूमि की वास्तविक स्थिति, किए गए निर्माण की वैधता और संबंधित दस्तावेजों की पड़ताल की जाएगी। ग्रामीणों का आरोप है कि पंचायत की जमीन पर नियमों के विपरीत निर्माण कार्य कराया गया है, जिससे गांव की सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचा है। शिकायत में मौजूदा सरपंच और पूर्व सरपंच के नाम भी शामिल किए गए हैं। पंचायत सचिव जांच पूरी कर जल्द रिपोर्ट सौंपेंगे, जिसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। ग्रामीणों ने मांग की है कि पंचायत भूमि को अवैध कब्जे से मुक्त कराया जाए और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।

प्रशासन पर उठाए सवाल

अगवानपुर में पंचायत की भूमि पर अवैध कब्जे और निर्माण को लेकर न्याय युद्ध मंच के संयोजक एवं सामाजिक कार्यकर्ता देवेंद्र गौतम ने आरोप लगाया है कि गांव में पंचायत भूमि पर अवैध कब्जा कर निर्माण कार्य किया जा रहा है, लेकिन शिकायतों और खबरों के बावजूद प्रशासन कार्रवाई से बच रहा है। देवेंद्र गौतम ने बताया कि इस संबंध में उपायुक्त सोनीपत को लिखित शिकायत दी जा चुकी है और मामला जिला कष्ट निवारण समिति की बैठक में भी उठाया गया, इसके बावजूद कार्रवाई नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि उपायुक्त द्वारा जांच की जिम्मेदारी सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपी गई है, लेकिन मौके पर कोई ठोस कार्रवाई दिखाई नहीं दे रही। उन्होंने कहा कि सरपंच पर लगे आरोप यदि निराधार हैं तो निष्पक्ष जांच से सच्चाई सामने आनी चाहिए।

खुद पर गोली चलने की बनाई थी कहानी, अवैध हथियार सहित युवक काबू

सोनीपत। थाना सदर सोनीपत पुलिस ने झूठी शिकायत दर्ज कराकर पुलिस को गुमराह करने वाले एक आरोपित को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपित अमित निवासी कबीरपुर सोनीपत है, जिसके कब्जे से एक अवैध पिस्तौल और दो जिंदा रौंद बरामद किए गए हैं। पुलिस के अनुसार अमित ने 26 जनवरी को शिकायत दी थी कि नरेला निवासी डेनी ने साथियों के साथ उस पर फायर किया, जिससे उसके पैर में गोली लगी। जांच के दौरान शिकायत में कई असंगतियां सामने आईं। गहन पूछताछ में अमित ने स्वीकार किया कि उसने पुलिस कार्रवाई से बचने के लिए झूठी कहानी बनाई थी और वास्तव में उसके पास खुद अवैध हथियार था। उप निरीक्षक अजमेर के नेतृत्व में पुलिस टीम ने आरोपित को गिरफ्तार कर हथियार बरामद किया। आरोपित को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। पुलिस ने कहा कि झूठी शिकायत देकर कानून को गुमराह करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

बीमा पॉलिसी के नाम पर करोड़ों की ठगी, व्हाट्सएप हैक कर खाते साफ

साइबर अपराधियों ने दो मामलों में 40.89 लाख रुपये की चपत लगाई

हरिभूमि न्यूज ▸▸| सोनीपत

साइबर अपराधियों ने बीमा पॉलिसी की जमा राशि दिलाने का झांसा देकर और व्हाट्सएप अकाउंट हैक कर दो अलग-अलग मामलों में लोगों से 40.89 लाख रुपये की ठगी कर ली। दोनों मामलों की शिकायत मिलने के बाद साइबर थाना पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि शुरुआती जांच में ठगी के लिए फर्जी बैंक खातों और डिजिटल भुगतान माध्यमों का इस्तेमाल सामने आया है।

पहले मामले में सैनीपुरा निवासी किसान राजेश कुमार ने साइबर थाना में शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने बताया कि उनके नाम बजाज एलायंज कंपनी की एक बीमा पॉलिसी थी, जिसमें कोरोना काल के बाद से कोई लेनदेन नहीं हुआ था। इसी का फायदा उठाकर साइबर ठगों ने उन्हें अपने जाल में फंसा लिया। 16 सितंबर 2024 को उनके मोबाइल पर अलग-अलग नंबरों से कॉल आनी शुरू हुई। कॉल करने वालों ने खुद को बीमा कंपनी से जुड़ा बताते हुए पॉलिसी की जमा पूंजी वापस दिलाने का भरोसा दिलाया।

शिकायत के अनुसार, ठगों ने खुद को राशि मेहता, अजय तिवारी और मोनिका रावत नाम से परिचित कराया। उन्होंने कहा कि पॉलिसी की रकम निकालने के लिए कुछ औपचारिकताएं पूरी करनी होंगी और प्रोसेसिंग चार्ज तथा किस्त के रूप में कुछ राशि जमा करनी पड़ेगी। लगातार फोन कॉल और भरोसेमंद बातचीत के जरिए आरोपितों ने पीड़ित को विश्वास में ले लिया। इसके बाद गूगल पे और फोन पे के माध्यम से अलग-अलग बैंक खातों में रकम ट्रांसफर करवाई गई। राजेश कुमार ने बताया कि साइबर ठगों ने उनसे कुल 89 बार में पैसे जमा करवाए। कभी 10,750 रुपये, कभी 20 से 30 हजार रुपये, तो कभी 50 हजार, 60 हजार और 75 हजार रुपये तक की राशि ट्रांसफर करवाई गई। इस तरह धीरे-धीरे उनसे कुल 35.28 लाख रुपये निकलवा लिए गए। जब लंबे समय बाद भी पॉलिसी की राशि नहीं मिली और कॉल आनी बंद हो गईं, तब उन्हें ठगी का अहसास हुआ। पीड़ित ने तुरंत 1930 साइबर हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराई। जांच में सामने आया कि जिन खातों में पैसे ट्रांसफर कराए गए, वे सभी फर्जी दस्तावेजों के आधार पर खुलवाए गए थे। साइबर थाना पुलिस ने इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कर बैंक खातों, मोबाइल नंबरों और डिजिटल ट्रांजेक्शन की जांच शुरू कर दी है।

व्हाट्सएप हैक कर उड़ाए 5.61 लाख

दूसरा मामला खरखौदा क्षेत्र का है, जहां व्हाट्सएप अकाउंट हैक कर बैंक खाते से 5.61 लाख रुपये की ठगी की गई। खरखौदा निवासी वीरेंद्र सिंह ने साइबर थाना पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 23 जनवरी को अचानक उनका व्हाट्सएप अकाउंट किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा हैक कर लिया गया। हैरानी की बात यह रही कि उन्हें न तो कोई ओटीपी मिला और न ही किसी संदिग्ध लिंक पर क्लिक किया गया। वीरेंद्र सिंह के अनुसार, उसी दिन उनके बैंक खाते से 10 अलग-अलग ट्रांजेक्शन के जरिए कुल 5.61 लाख रुपये अन्य खातों में ट्रांसफर कर लिए गए। मोबाइल पर बैंक से मैसेज आने के बाद उन्हें खाते से रकम निकलने की जानकारी मिली। उन्होंने तुरंत बैंक से संपर्क किया और 1930 साइबर हेल्पलाइन पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराई। जांच के बाद साइबर थाना पुलिस ने इस मामले में भी प्राथमिकी दर्ज कर ली है।

नाबालिग की डिलीवरी जीरो एफआईआर दर्ज

हरिभूमि न्यूज ▸▸| सोनीपत

बहालगढ़ थाना क्षेत्र से जुड़े एक संवेदनशील मामले में नागरिक अस्पताल में नाबालिग की डिलीवरी होने की सूचना मिलते ही पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए कानूनी प्रक्रिया शुरू कर दी। पीड़िता के बयान के आधार पर पुलिस ने उसके साथ प्रेम विवाह करने वाले युवक के खिलाफ शून्य प्राथमिकी दर्ज कर उसे बिहार के मुंगेर जिले में भेज दिया है।

पुलिस को जानकारी मिली कि नागरिक अस्पताल में डिलीवरी के दौरान जांच में सामने आया कि गर्भवती की उम्र 16 वर्ष है। इसके बाद अस्पताल प्रशासन ने इसकी सूचना बहालगढ़ थाना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने नाबालिग के बयान दर्ज किए, जिसमें उसने बताया कि वह 22 वर्षीय संतो कुमार से प्रेम करती थी और दोनों ने बिहार में शादी की थी। पीड़िता ने बताया कि शादी के बाद वह गर्भवती हो गई थी। करीब दो माह पहले वह संतो कुमार के साथ रोजगार के लिए बहालगढ़ थाना क्षेत्र की एक कंपनी में काम करने आई थी, जहां दोनों कंपनी परिसर के एक कमरे में रह रहे थे।

वह प्रसव के लिए अस्पताल पहुंची थी। चिकित्सकीय जांच के दौरान उसकी उम्र नाबालिग पाए जाने की पुष्टि हुई। गर्भावस्था की अवधि नौ माह पूर्ण होने के कारण उसकी सामान्य डिलीवरी कराई गई, जिसमें उसने बच्चे को जन्म दिया। अस्पताल प्रशासन ने नियमानुसार इसकी सूचना पुलिस को दी।

कार्यक्रम

कुल 85 बसों की डिमांड, 46 बसों से 1230 लोग समारोह में पहुंचे, 39 बस सोनीपत व गोहाना डिपो में वापस पहुंची

रोडवेज ने 46 बसें प्रशासनिक ड्यूटी में भेजी, लोकल रूट पर यात्रियों को निजी बसों व वाहनों का लेना पड़ा सहारा

उमरी में गुरु रविदास जयंती के उपलक्ष्य में राज्यस्तरीय समारोह किया गया

हरिभूमि न्यूज ▸▸| सोनीपत

कुरुक्षेत्र के गांव उमरी में गुरु रविदास जयंती के उपलक्ष्य में शनिवार को राज्यस्तरीय समारोह का आयोजन किया गया। समारोह को लेकर जिले से 46 बसें प्रशासनिक ड्यूटी पर तैनात रही। हालांकि विभाग की ओर से समारोह के लिए 85 बसों को प्रशासनिक ड्यूटी पर भेजा गया था, लेकिन किन्हीं कारणों के चलते 39 बसें वापस डिपो वापस भेज दी गई, जबकि 23 सोनीपत बस डिपो व 23 गोहाना डिपो की बसें प्रशासनिक ड्यूटी में शामिल रहीं। ऐसे में सोनीपत बस अड्डे से संचालित विभिन्न लोकल रूट शनिवार को प्रभावित रहे, जबकि कुछ बंद रहे। इससे यात्रियों को निजी बसों व वाहनों का सहारा लेना पड़ा, जबकि लंबे रूटों पर बसों का आवागमन सुचारू रहा। कुरुक्षेत्र के गांव उमरी में शनिवार को मनाए गए राज्य स्तरीय गुरु रविदास जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने शिरकत की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कैबिनेट मंत्री कृष्णलाल पंवार ने की। जिले से करीब 1230 लोग ही रोडवेज बसों में सवार होकर समारोह में शामिल होने के लिए रवाना हुए। समारोह में लोगों को पहुंचने के लिए आवागमन में परेशानी न झेलनी पड़े, इसी उद्देश्य के साथ रोडवेज विभाग से 85 बसों की डिमांड की गई थी। उक्त बसें 30 जनवरी की शाम को ही विभिन्न ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में तैनात कर दी गई थी, ताकि सुबह समय पर कार्यक्रम में पहुंचा जा सके। इन बसों में से महज 46 बसें ही कार्यक्रम में भेजी गई। इनमें 23 बसें सोनीपत डिपो व 23 बसें गोहाना डिपो की शामिल रही। सोनीपत बस डिपो से 46 बसों की डिमांड थी, लेकिन कार्यक्रम में जाने वाले लोगों की कमी की वजह से 39 बसें वापस अपने-अपने डिपो में लौट आई।

सोनीपत। बस अड्डा पर खड़ी रोडवेज बस व अपने रूट की बसें ढूंढते यात्री।

विभिन्न प्रदेशों व जिलों के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध

जिला से कुल 211 रोडवेज व 67 निजी बसों का परिचालन किया जा रहा है। इनमें 67 निजी बसें किलोमीटर के हिसाब से चलाई जा रही हैं। सोनीपत रोडवेज डिपो से रोजाना विभिन्न रूट पर 155 बसों का परिचालन किया जा रहा है। इनमें 37 बसें निजी शामिल की गई हैं, जिनका किलोमीटर के हिसाब से परिचालन किया जा रहा है। सोनीपत डिपो से दिल्ली, चंडीगढ़, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों के लिए सीधी बस सेवा उपलब्ध है। साथ ही रोहतक, हिसार, झज्जर सहित विभिन्न जिलों तक बसों का परिचालन किया जा रहा है।

कई लोकल रूट रहे बंद

सोनीपत डिपो से लोकल रूटों की बात करें तो यहां से गोहाना, गन्नौर, फरमाणा, खानपुर कलां सहित विभिन्न लोकल रूटों पर बसों का परिचालन किया जा रहा है। शनिवार को काफी बसें प्रशासनिक ड्यूटी में तैनात होने के कारण सोनीपत से फरमाणा, खानपुर कलां, पबनेरा, रिठाल, सोनीपत से खरखौदा विभिन्न लोकल रूट बसों का परिचालन बंद रहा।

46 बसों को ड्यूटी पर भेजा

कुरुक्षेत्र के गांव उमरी में शनिवार को राज्य स्तरीय गुरु रविदास जयंती समारोह का आयोजन किया गया। ऐसे में रोडवेज विभाग से बसों की डिमांड की गई थी। सोनीपत व गोहाना डिपो की 46 बसों को प्रशासनिक ड्यूटी पर लगाकर कार्यक्रम में भेजा गया। शनिवार को अवकाश होने व बसों के प्रशासनिक ड्यूटी में तैनात होने के कारण कुछ लोकल रूट बंद रखे गए। जबकि अन्य सभी रूटों पर बारी-बारी बसों को रवाना किया गया।

-देवेंद्र मान, डीआई, सोनीपत बस डिपो।

क्या कृषि नीति में बदलाव के बीज बो पाएगा बजट

उम्मीद है कि एक फरवरी को आने वाला बजट इस बार खेती को सिर्फ कल्याणकारी योजना न मानकर, इसे एक उत्पादक और तकनीकी-सक्षम क्षेत्र के रूप में विकसित करेगा।

बजट 2026 भारत की कृषि नीति में बदलाव के बीज बो सकता है। यह ऐसा क्षेत्र है जो भारत–अमेरिका व्यापार वार्ताओं में एक प्रमुख विवाद बिंदु बनकर उभरा है। खेती के मुद्दे पर ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पलटवार करने का फैसला किया। 7 अगस्त को दिल्ली में ट्रंप द्वारा टैरिफ की घोषणा के एक दिन बाद, उन्होंने कहा कि भारत अपने किसानों, डेयरी क्षेत्र और मछुआरों के कल्याण से कभी समझौता नहीं करेगा। अब सबकी निगाहें इस बात पर हैं कि सीतारमण अपने बही-खाते में भारत के अन्नदाताओं के लिए क्या खोलती हैं। क्या बजट 2026 केवल लेखा-जोखा संतुलित करेगा या घरेलू प्राथमिकताओं और वैश्विक व्यापार दबावों के बीच फंसे इस क्षेत्र के लिए किसी बड़े पुनर्संतुलन का संकेत देगा।

कृषि क्षेत्र
सेंट्रल डेस्क

समय की आवश्यकता

2050 तक भारत की जनसंख्या 1.6 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सतत विकास तथा एसडीजी लक्ष्यों के अनुरूप देश की कृषि निर्यात क्षमता को खोलना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेषज्ञ इस चुनौती से निपटने के लिए 4पी दृष्टिकोण की जरूरत बताते हैं।

प्रोड्यूज (उत्पादन): अनुसंधान एवं विकास में निवेश के जरिए अधिक उत्पादन

प्रोसेस (प्रसंस्करण): मूल्य संवर्धन और अवसंरचना के माध्यम से अधिक उत्पादन मूल्य

प्राइस (कीमत): कुशल आपूर्ति श्रृंखला और बेहतर मूल्य प्राप्ति के जरिए अधिकतम मूल्य

प्रोटेक्ट (संरक्षण): दीर्घकालिक स्थिरता के लिए संसाधनों की लचीली और टिकाऊ सुरक्षा

प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाएं

2026 में भारत वैश्विक मंच पर दो प्रमुख उपलब्धियों के साथ प्रमुख भूमिका में होगा। संयुक्त राष्ट्र ने 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किया है, जो कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और कृषि व ग्रामीण आजीविका में लैंगिक अंतर को पाटने की तत्काल आवश्यकता को मान्यता देता है। भारत अपनी अध्यक्षता में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा, जो अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने का अवसर देगा। आगामी केंद्रीय बजट महिला-नेतृत्व वाली कृषि पहलों के लिए संसाधन आवंटित कर व वैश्विक कृषि-खाद्य निर्यात में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को सशक्त बनाएगा।

अधिक धन की संभावना

पिछले केंद्रीय बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए आवंटन वित्त वर्ष 2025 में 1.52 लाख करोड़ और वित्त वर्ष 2026 में 1.37 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किया गया था, जबकि एमएसपी और इनपुट सब्सिडी सहित क्षेत्र पर वास्तविक प्रभावी व्यय 3.91 लाख करोड़ से अधिक रहा। अनुमान है कि इस क्षेत्र के लिए आवंटन में उत्तर की ओर बढ़त हो सकती है। अधिक आवंटन उभरते क्षेत्रों को प्रोत्साहन देगा और निर्यात लक्ष्यों, आत्मनिर्भरता, अनुसंधान एवं विकास तथा तकनीक-आधारित खेती को समर्थन प्रदान करेगा। यह बजट ऐसे समय में आ रहा है जब कृषि क्षेत्र सुस्ती के दौर से गुजर रहा है।

परिवहन में सड़ते अरबों रुपये

मजबूत अनाज उत्पादन के बावजूद भारत में भंडारण और लॉजिस्टिक्स की कमी के कारण फल और सब्जियों जैसी वस्तुओं का 15% से 20% तक नुकसान हो जाता है। पीडीएस भी रिसाव, अवसंरचना की कमी और बर्बादी जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है। यह कृषि उत्पादकता के लिए बड़ी बाधाएं हैं। आगामी बजट में फसल कटाई के बाद प्रबंधन हेतु कोल्ड चेन, आधुनिक गोदाम, प्रसंस्करण इकाइयां और डिजिटल आपूर्ति-श्रृंखला प्रबंधन जैसी कृषि अवसंरचना में निवेश तेज किया जाना चाहिए। मूल्य स्थिरीकरण कोष (पीएसएफ) का विस्तार होना चाहिए। इसका उपयोग पहले से प्याज और दाल की कीमतों को स्थिर करने के लिए किया जा रहा है। अन्य सस्ती आवश्यक वस्तुओं जैसे दाल, आटा और चावल की उपलब्धता नेटवर्क को मजबूत करना, निम्न-आय वर्ग के लिए वहनीयता बनाए रखने में मदद करेगा।

खाद्य सुरक्षा के लिए कदम

सरकार के राष्ट्रीय खाद्य तेल–तिलहन मिशन और आत्मनिर्भर दाल मिशन, आत्मनिर्भरता की स्पष्ट दिशा दर्शाते हैं। इसमें तिलहन के लिए 2030–31 तक 10,103 करोड़ रुपये का प्रावधान है। उत्पादन को 39 मिलियन टन से बढ़ाकर लगभग 70 मिलियन टन करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें 40 लाख हेक्टेयर धान-परती भूमि को तिलहन के तहत लाने की योजना शामिल है। इसी प्रकार 1,000 करोड़ के समर्थन वाले दाल मिशन का लक्ष्य 2027 तक चयनित दालों में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, जिसके तहत 126 लाख क्विंटल प्रमाणित बीजों का वितरण और 88 लाख मुफ्त बीज किट उपलब्ध कराई जाएंगी। बजट में इन प्रयासों को और मजबूत करना चाहिए, खासकर इसलिए क्योंकि भारत अभी भी अपनी खाद्य तेल आवश्यकता का लगभग 60% आयात करता है और दालों का भी बड़ा हिस्सा बाहर से लाता है। खाद्य और पोषण सुरक्षा की शुरुआत खेतों से होती है। भारतीय कृषि में पैमाना भी है और स्थायित्व भी। बजट 2026 यह तय करेगा कि सरकार पुरानी लकीरों पर ही हल चलाती रहेगी या इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर बड़ी फसल काटने में मदद करेगी।

कीटनाशक देश को खाद्य सुरक्षा देने में भी अहम फसल सुरक्षा के लिए स्पष्ट नियमों की दरकार

खाद्य सुरक्षा
सेंट्रल डेस्क

भारतीय कृषि एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। एक ओर देश आत्मविश्वास के साथ स्वयं को वैश्विक खाद्य महाशक्ति, दुनिया के लिए एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता और कृषि विनिर्माण के केंद्र के रूप में स्थापित करने की बात करता है। दूसरी ओर फसल सुरक्षा, किसानों की स्थिरता और खाद्य मूल्य संतुलन की रीढ़ से जुड़ा नीतिगत पारिस्थितिकी तंत्र सक्रिय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जैसे-जैसे केंद्रीय बजट 2026 नजदीक आ रहा है, यह समय अधिक स्पष्टता, विश्वास और विज्ञान-आधारित निर्णय प्रक्रिया के प्रति नए सिरे से प्रतिबद्धता का अवसर प्रदान करता है। पिछले वर्ष के दौरान फसल सुरक्षा पर सार्वजनिक विमर्श विशेष रूप से सक्रिय रहा है। कीटनाशकों पर अक्सर केवल जोखिम के दृष्टिकोण से चर्चा होती है, जबकि फसल हानि रोकने, किसानों की आय की रक्षा करने और खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने में उनकी भूमिका पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। यह असंतुलन ऐसे समय में सामने आता है जब भारतीय किसान हर वर्ष कीटों, रोगों और खरपतवारों के कारण 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की फसलें खो देते हैं। यह ऐसी हानि है जिसे खाद्य सुरक्षा और निर्यात नेतृत्व की आकांक्षा रखने वाला कोई भी देश अनदेखा नहीं कर सकता।

सही संतुलन की जरूरत

प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2025 का उद्देश्य भारत की नियामकीय रूपरेखा को आज की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाना है। निगरानी को मजबूत करने, अनुपालन में सुधार लाने और किसानों व उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का इरादा समयानुकूल और आवश्यक है। हालांकि, सभी बुनियादी सुधारों की तरह इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि इन उद्देश्यों को व्यवहार में कितनी प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक को ऐसे बजट का पूरक समर्थन मिल सकता है, जो नियामकीय क्षमता, आधुनिक परीक्षण अवसंरचना और कुशल मूल्यांकन समयसीमा को सुदृढ़ करे। ये कदम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि नई रूपरेखा सुरक्षित कृषि की ओर पुल का काम करे। इसलिए बजट से फसल सुरक्षा क्षेत्र एक मूलभूत आर्थिक वास्तविकता की स्पष्ट स्वीकृति चाहता है। असल में उपज की रक्षा करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका उत्पादन करना। इसलिए फसल सुरक्षा उत्पाद उत्पादकता बनाए रखने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। उन्हें आवश्यक कृषि इनपुट के रूप में मान्यता देना कृषि लचीलापन और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में उनके योगदान को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करेगा।

किसान-केंद्रित सुधार होगा जीएसटी को तर्कसंगत बनाना

बजट की सबसे तात्कालिक अपेक्षाओं में से एक है फसल सुरक्षा उत्पादों पर जीएसटी को अधिकतम 5% तक तर्कसंगत बनाना, ताकि उन्हें अन्य उर्वरकों (बायोस्टिमुलेंट/जैविक उत्पादों) के समान स्तर पर लाया जा सके। ऐसा कदम किसानों पर लागत के दबाव को कम करेगा और उच्च गुणवत्ता वाले वैध उत्पादों की उपलब्धता बढ़ाकर जिम्मेदार उपयोग को प्रोत्साहित करेगा। इस दृष्टि से यह रियायत से अधिक एक किसान-केंद्रित सुधार है, जो कृषि मूल्य श्रृंखला में उत्पादकता, सुरक्षा और अनुपालन को मजबूत करता है।

विनिर्माण का अवसर

नए फसल सुरक्षा अणुओं के निर्माण के लिए लक्षित प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) ढांचा वैश्विक स्तर के निवेश आकर्षित करने, घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को गहरा करने और भारत को अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखलाओं में अधिक मजबूती से एकीकृत करने में मदद कर सकता है। यह केवल आयात प्रतिस्थापन का मामला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजारों के लिए भारत को एक विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी उत्पादक के रूप में स्थापित करने का अवसर है।

नवाचार को वित्तीय समर्थन

फसल सुरक्षा नवाचार विज्ञान-प्रधान, पूंजी-आधारित और स्वाभाविक रूप से दीर्घकालिक प्रक्रिया है। एक नए अणु के विकास में एक दशक से अधिक समय लग सकता है, जिसके लिए सतत निवेश और नियामकीय निश्चितता आवश्यक है। यद्यपि भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को मान्यता देने में प्रगति की है, फिर भी कृषि अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय समर्थन को और मजबूत करने की गुंजाइश है। भारत फसल सुरक्षा को किसान लचीलापन, निर्यात वृद्धि और खाद्य सुरक्षा के लिए एक रणनीतिक साधन के रूप में सुदृढ़ कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वित्तीय और नियामकीय ढाँचे राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा के अनुरूप आगे बढ़ें। लिया गया निर्णय न केवल उद्योग के परिणामों को प्रभावित करेगा, बल्कि भारत की कृषि अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रतिस्पर्धात्मकता को भी आकार देगा।

इंश्योरेंस सेक्टर्स को भी चाहिए बड़ी राहत

बीमा
सेंट्रल डेस्क

इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बढ़ती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है। इंश्योरेंस सेक्टर को बजट से कई उम्मीदें होती हैं, खासकर टैक्स छूट और पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाओं में वृद्धि की ऐसे में आइए जानते हैं इस बजट में इंश्योरेंस सेक्टर के लिए क्या कुछ खास पेश हो सकता है। एक फरवरी को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण केंद्रीय बजट 2026 पेश करने वाली है। ऐसे में अब देखना यह है कि बजट 2026 में वित्त मंत्री क्या क्या ऐलान करती हैं और इन ऐलानों से आम लोगों और अलग अलग सेक्टर्स को क्या क्या लाभ मिलता है। बात करें इंश्योरेंस सेक्टर की तो इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बढ़ती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है।

■ वित्त मंत्री एक फरवरी को कर सकती हैं बड़े ऐलान

सेक्शन 80डी की टैक्स सीमा

इलाज और मेडिकल खर्च लगातार तेजी से बढ़ रहे हैं। बावजूद इसके इनकम टैक्स एक्ट की धारा 80डी के तहत हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर मिलने वाली 25,000 रुपये की टैक्स कटौती सीमा कई सालों से बिना बदलाव के बनी हुई है। ऐसे में इस समय में यह सीमा आम लोगों को पर्याप्त राहत नहीं देती है। ऐसे में अब उम्मीद है कि सरकार इस बजट में इस सीमा को 25,000 रुपये से बढ़ाकर 50,000 रुपये कर सकती है।

टर्म इंश्योरेंस पर फोकस

भारत में आज भी बड़ी संख्या में लोगों के पास पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस सुरक्षा कवर नहीं है। रिपोर्ट्स के अनुसार, देश में करीब 17 ट्रिलियन डॉलर का मॉर्टलिटी प्रोटेक्शन गैप मौजूद है यानी लोगों को जितनी जीवन बीमा सुरक्षा की जरूरत है, उसके मुकाबले लगभग 83 प्रतिशत जरूरतें अब भी पूरी नहीं हो पाई हैं। ऐसे में सरकार को टर्म इंश्योरेंस को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके लिए हेल्थ इंश्योरेंस पर टैक्स छूट, टर्म इंश्योरेंस प्रीमियम पर अलग टैक्स छूट मिलनी चाहिए।

जीएसटी और इंश्योरेंस प्रीमियम

इंश्योरेंस सेक्टर लंबे समय से जीएसटी से जुड़ी राहत की मांग कर रहा है. बीमा कंपनियां केवल जीएसटी से छूट नहीं, बल्कि पूरे सेक्टर को जीरो-रेटेड दर्जा दिए जाने की मांग कर रही हैं। अगर इंश्योरेंस को जीरो-रेटेड किया जाता है, तो कंपनियां अपने रोजमर्रा के खर्चों पर चुकाए गए टैक्स का इनपुट टैक्स क्रेडिट ले सकेंगी। इससे यह अतिरिक्त टैक्स बोझ प्रीमियम में नहीं जोड़ा जाएगा और ग्राहकों को कम प्रीमियम देना पड़ेगा।

यह भी चाहिए

- **टैक्स छूट:** इंश्योरेंस पॉलिसियों पर टैक्स छूट की सीमा बढ़ाने की मांग।
- **पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाएं :** पॉलिसीधारकों के लिए क्लेम सेटलमेंट प्रक्रिया को सरल बनाने और अधिक सुविधाएं प्रदान करने की उम्मीद।
- **इंश्योरेंस पेनेट्रेशन बढ़ाना :** इंश्योरेंस सेवाओं को अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए सरकार से समर्थन की उम्मीद।
- **नियमों में बदलाव :** इंश्योरेंस सेक्टर को अधिक लेबल प्लेयरों को आकर्षित करने और विकास को बढ़ावा देने के लिए नियमों में बदलाव की उम्मीद।

यह भी जानिये

किस वित्त मंत्री ने पेश किए कितने बजट

भारत में हर साल 1 फरवरी के केंद्रीय बजट पेश किया जाता है। यह बजट भारत के वित्त मंत्री द्वारा पेश किया जाता है। हर साल की तरह इस साल भी केंद्रीय बजट 2026 आने वाली 1 फरवरी को भारत, की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया जाएगा। 1947 में आजादी के बाद से अब तक भारत के कई वित्त मंत्रियों ने संसद में बजट पेश किए हैं। कुछ वित्त मंत्री थोड़े समय के लिए रहे और कम बजट पेश किए। वहीं, कुछ वित्त मंत्री लंबे समय के लिए रहें और उन्होनें कई बजट पेश किए। आज हम आपको इसी के बारे में बताने वाले हैं। हम आपको बताएंगे कि 1947 में आजादी के बाद से भारत के किन वित्त मंत्रियों ने कितने बजट पेश किए। आइए जानते हैं पूरी जानकारी।

आजादी के बाद पहला बजट

- आर. के. शनमुखम चेट्टी आजादी के बाद भारत के पहले वित्त मंत्री थे. उन्होने 26 नवंबर 1947 में स्वतंत्र भारत का पहला बजट पेश किया था। आर. के. शनमुखम चेट्टी एक वकील और इकोनॉमिस्ट भी थे।
- भारत के सबसे ज्यादा बजट पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने पेश किए हैं. उन्होंने कुल 10 बजट पेश किए हैं। हालांकि, यह 10 बजट उन्होंने लगातार पेश नहीं किए। उन्होंने पहले 1959 से 1964 के बीच 6 बजट पेश किए और 1967 से 1969 के बीच 4 बजट पेश किए।
- पी चिदंबरम भारत के पूर्व वित्त मंत्री रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कुल 9 बजट पेश किए। उन्होंने अपना पहला बजट 1996 में पेश किया था. वहीं साल 2004 से 2008 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए. बाद में वह साल 2009 में एक बार फिर वित्त मंत्री बनें और उन्होंने साल 2013 से 2014 के बीच बजट पेश किए।
- पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने भी भारत में बजट पेश किए हैं। उन्होंने पहले वित्त मंत्री के रूप में भी कार्यकाल संभाला था। इस दौरान उन्होंने कुल 8 बजट पेश किए थे। उन्होंने पहले 3 बजट साल 1982 से 1984 के बीच पेश किए। वहीं साल 2009 से 2011 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए।
- निर्मला सीतारमण भारत की वर्तमान वित्त मंत्री है और वह साल 2019 से इस पद पर है। अब तक वहां 8 बजट पेश कर चुकी हैं और आने वाली 1 फरवरी को वह 9वां बजट पेश करने वाली हैं।

बजट से कंपनियों को बड़ी उम्मीद, अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने का खाका तैयार

बजट में इन सेक्टर्स पर फोकस बढ़ेगा तो बदलेगी ग्रोथ की तस्वीर लॉजिस्टिक कॉस्ट घटेगी, निवेश बढ़ेगा और रोजगार पैदा होंगे

इंफ्रास्ट्रक्चर, मैन्युफैक्चरिंग, ग्रीन एनर्जी और एमएसएमई पर भी ध्यान दे केंद्र सरकार

इन्फ्रा
सेंट्रल डेस्क

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को आम बजट पेश करेंगी। इस बजट से भारतीय कंपनियों को कई बड़ी उम्मीदें हैं। उद्योगों से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि केंद्र सरकार को इस बार बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, मैन्युफैक्चरिंग में वैल्यू एडिशन बढ़ाने, ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने और एमएसएमई सेक्टर को सस्ता और आसान कर्ज दिलाने पर खास फोकस करना चाहिए, ताकि लॉजिस्टिक कॉस्ट घटे और बिजनेस की रफ्तार बनी रहे। इंडस्ट्री के एक्सपर्ट्स का कहना है कि मौजूदा वैश्विक हालात में ग्रोथ बनाए रखने के लिए शॉर्ट टर्म राहत से ज्यादा जरूरी है कि अर्थव्यवस्था की बुनियाद को मजबूत किया जाए। कंपनियों का भरोसा बढ़ेगा व लंबे समय में देश की प्रतिस्पर्धा क्षमता भी बेहतर होगी।

ग्लोबल तनाव बढ़ा रहे चुनौतियां

अमेरिका के बढ़ते टैरिफ, लगातार चल रहे जियो-पॉलिटिक्स तनाव और सप्लाई चेन में बदलावों की वजह से कंपनियों के लिए अब लागत को काबू में रखना, नीति की स्थिरता और प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा करना बहुत अहम हो गया है। यही वजह है कि निवेश और व्यापार से जुड़े फैसले पहले से ज्यादा सोच-समझकर लिए जा रहे हैं।

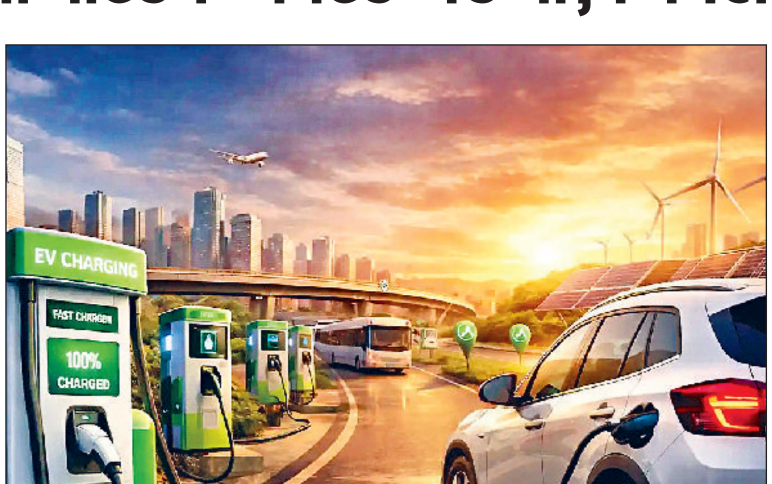

भारत की स्थिति बेहतर

दुनिया भर में कंपनियों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में मजबूत स्थिति में है। इसकी वजह सरकार का पब्लिक इन्वेस्टमेंट पर लगातार फोकस, टैक्स सुधार और कंपनियों की बेहतर बैलेंस शीट है। अब चुनौती यह है कि इस मजबूती को लंबे समय तक टिकाऊ ग्रोथ में बदला जाए और मैन्युफैक्चरिंग व एक्सपोर्ट को और मजबूत किया जाए।

कम हुई लॉजिस्टिक कॉस्ट

पिछले एक दशक में सरकार ने सड़क, रेलवे और इंफ्रास्ट्रक्चर में लगातार निवेश बढ़ाया है, जिससे कनेक्टिविटी बेहतर हुई है। वित्तवर्ष 18 से वित्तवर्ष 26 के बीच इंफ्रास्ट्रक्चर पर बजट सपोर्ट करीब 12% सीएजीआर से बढ़ा है। इसका असर यह हुआ है कि देश की लॉजिस्टिक कॉस्ट घटकर अब करीब 7.97% रह गई है। चूंकि रेलवे सामान ढोने का सबसे सस्ता जरिया है, इसलिए बजट में रेलवे की क्षमता बढ़ाने और प्राइवेट सेक्टर के लिए कार्गो सुविधा बढ़ाने पर जोर जारी रहना चाहिए। इसके साथ ही सड़कों पर कैपेक्स बनाए रखते हुए बीओटी मॉडल के जरिए निजी निवेश को भी बढ़ावा देना जरूरी है।

मैन्युफैक्चरिंग को मजबूत करने की जरूरत

भारत में मैन्युफैक्चरिंग का योगदान जीडीपी में अभी करीब 17% है, जबकि सरकार का लक्ष्य इसे 25% तक ले जाना है। पीएलआई स्कीम (1.9 लाख करोड़, 14 सेक्टर) से कुछ फायदा जरूर हुआ है, लेकिन अब भी लोकल मैन्युफैक्चरिंग, लागत और एग्जिक्यूशन से जुड़ी कई चुनौतियां बनी हुई हैं। इसलिए बजट में रिसर्च एंड डेवलपमेंट, टेक्निकल स्किल और इनोवेशन पर टैक्स छूट या इंसेंटिव देने की जरूरत है, खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक्स, ईवी, डेटा सेंटर, एनर्जी स्टोरेज और सोलर जैसे सेक्टरों में।

ग्रीन एनर्जी पर भरोसेमंद पॉलिसी जरूरी

भारत ने 2030 तक जीडीपी की एमिशन इंटेंसिटी 45% घटाने, 500 जीडब्ल्यू नॉन-फॉसिल पावर कैपेसिटी हासिल करने और 2070 तक नेट-जीरो बनने का लक्ष्य रखा है। अब कंपनियों को जरूरत है स्पष्ट पॉलिसी और लॉन्ग टर्म फंडिंग की, ताकि वे भरोसे के साथ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में निवेश कर सकें। बजट से उम्मीद है कि ग्रीन इन्वेस्टमेंट के लिए बेहतर फाइनेंसिंग सिस्टम बने, क्लीन एनर्जी क्लस्टर विकसित हों और प्रोजेक्ट्स को तेजी से लागू किया जा सके।

एमएसएमई को सस्ता और आसान लोन मिलना जरूरी

एमएसएमई सेक्टर देश के जीडीपी का करीब 30% और एक्सपोर्ट का 45% योगदान देता है, लेकिन इन्हें अब भी महंगा कर्ज और पेमेंट डिले जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बजट में ऐसे कदम जरूरी हैं, जिससे एमएसएमई को तेजी से और कम ब्याज पर लोन मिल सके। इसके साथ ही मुद्रा योजना के तहत लोन की सीमा बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि प्रोजेक्ट्स की लागत अब पहले से कहीं ज्यादा हो चुकी है।

इन क्षेत्रों को भी चाहिए बूस्ट

फार्मा और मेडटेक को लेकर बड़ी उम्मीद

बजट 2026 में सरकार को फार्मा और मेडिकल डिवाइस सेक्टर में आत्मनिर्भरता पर जोर देना चाहिए। उनका सुझाव है कि मेडिकल डिवाइस सेक्टर के लिए 10,000 करोड़ रुपये का पीएलआई पैकेज दिया जाना चाहिए, जिससे ऑन्कोलॉजी, इमेजिंग और इम्प्लांट जैसे सेगमेंट में घरेलू मैन्युफैक्चरिंग बढ़े। जीवन कसारा के मुताबिक, अगर यह पीएलआई सपोर्ट मिलता है, तो भारत की मेडिकल डिवाइसेज में 70% तक की आयात निर्भरता घट सकती है और 2030 तक देश में 1.2 लाख करोड़ रुपये का घरेलू उत्पादन खड़ा किया जा सकता है।

खबर संक्षेप

शिक्षक ने बांटी मां की पुण्यतिथि पर स्टेशनरी

गोहाना। शैक्षणिक खंड मुंडलाना के अंतर्गत राजकीय प्राथमिक पाठशाला खंदराई में कार्यरत जेबीटी शिक्षक जयपाल लाठर ने शनिवार को मां की पुण्यतिथि पर विद्यार्थियों में स्टेशनरी बांटी। शिक्षक ने सेवा पत्नी सुनील रानी के साथ की। शिक्षक जयपाल ने कहा कि माता-पिता का दर्जा दुनिया में सबसे ऊंचा होता है। उनकी सेवा करना हमारा कर्तव्य है। शिक्षक ने विद्यार्थियों से कहा कि वे माता-पिता की बात मानें और उनके मार्गदर्शन में आगे बढ़ें। माता-पिता द्वारा बताए गए रास्ते पर चलने से ही जीवन में सफलता प्राप्त होती है। ग्रामीण सुधार समिति के अध्यक्ष जगमहेंद्र सिंह, पाठशाला प्रबंधन समिति अध्यक्ष कुलदीप सिंह, मुख्य शिक्षक अजीत सिंह, विजय सिंह, विनोद कुमार मौजूद रहे।

देवांशी ने नॉर्थ जोन योग प्रतियोगिता में जीता सोना

सोनीपत। अस्मिता वूमेन लीग नॉर्थ जोन योग प्रतियोगिता में ब्राइट स्कॉलर स्कूल की कक्षा आठवीं से देवांशी गर्ग ने आर्टिस्टिक ग्रुप ने गोल्ड मेडल और ट्रेडिशनल ग्रुप ने रजत पदक जीता है। प्रतियोगिता का आयोजन हापुड़ में किया गया। विद्यालय पहुंचने पर प्राचार्या डॉ. किरण दलाल ने देवांशी का स्वागत किया और बधाई दी। युक्ति ने भी प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन किया।

टीकाराम गर्ल्स कॉलेज की छात्राएं रही अव्वल

सोनीपत। मदवि द्वारा आयोजित क्रॉस कंट्री इंटर कॉलेज प्रतियोगिता में टीकाराम गर्ल्स कॉलेज की छात्राओं ने पहला स्थान हासिल किया। कॉलेज प्राचार्या गीता ने छात्राओं को बधाई दी। शारीरिक शिक्षा विभाग की अध्यापिका डॉ. सुमन मान ने बताया की यह प्रतियोगिता 29 जनवरी को एमडीयू में आयोजित की गई थी। जिसमें टीकाराम गर्ल्स कॉलेज की छात्राओं अंकिता, ज्योति, तनीषा, अंजलि, खुशी, इशिका ने 10 नम्बर बनाकर प्रथम स्थान हासिल किया। एमडीयू रजिस्ट्रार डॉ. कृष्णकांत गुप्ता द्वारा कॉलेज को ट्रॉफी से नवाजा गया।

दिल्ली-पानीपत सड़क पर दस तक मरम्मत का काम चलेगा

भिगान टोल प्लाजा के पास लगा तीन किमी लंबा जाम

हरिभूमि न्यूज ▸▸ गन्नौर

भिगान टोल प्लाजा के निकट दिल्ली-पानीपत लेन पर शनिवार को करीब तीन किलोमीटर लंबा जाम लग गया। जाम के कारण वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। वाहनों की रफ्तार थमने से टोल प्लाजा के आसपास लंबी कतारें लग गईं और कई वाहन चालक करीब 2 घंटे तक जाम में फंसे रहे। जानकारी अनुसार राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) द्वारा टोल प्लाजा भिगान से हल्द्वानी बार्डर तक दिल्ली से पानीपत की ओर जाने वाली सड़क पर 2 से 10 फरवरी तक सड़क मरम्मत का कार्य किया जाएगा। इस दौरान पैच वर्क और लेयरिंग का काम किया जाएगा। शनिवार को भी सड़क पर मुरम्मत का काम किया जा रहा था, जिससे भिगान टोल प्लाजा के निकट दिल्ली-पानीपत लेन पर लंबा जाम लग गया। इस दौरान यातायात पुलिस ने व्यवस्था को संभाला और वाहनों की वाहनों को एक-एक कर निकलवाया। मरम्मत का काम पूरा होने के बाद जाम पूरी तरह से खुल गया।

गन्नौर। दिल्ली-पानीपत लेन पर लगा जाम। फोटो :हरिभूमि

बंद हो सकती है लेन

एनएचएआई से मिली जानकार अनुसार मरम्मत कार्य के चलते भिगान टोल प्लाजा के निकट दिल्ली-पानीपत लेन को आंशिक रूप से बंद किया जा सकता है। इससे सुबह व शाम के समय यातायात धीमा रहने और जाम की स्थिति बनेगी। विशेषकर सुबह और शाम के समय कार्यालय जाने और लौटने वाले यात्रियों को अधिक दिक्कत हो सकती है।

निर्देशों का पालन करें

एनएचएआई ने वाहन चालकों से अपील की है कि वे असुविधा से बचने के लिए समय से पहले यात्रा की योजना बनाएं। आवश्यकता होने पर वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करें और गूगल मैप्स या अन्य नेविगेशन ऐप की सहायता लें। साथ ही मरम्मत स्थल के आसपास निर्धारित गति सीमा का पालन करें और मौके पर तैनात कर्मचारियों के निर्देशों का पालन करें, ताकि किसी भी तरह की दुर्घटना से बचा जा सके। किसी भी आपात स्थिति या सड़क से जुड़ी समस्या के लिए यात्री एनएचएआई की हेल्पलाइन नंबर 1033 पर संपर्क करें।

सिर्फ शिक्षा के प्रकाश से ही हटेगा जीवन का अंधकार : शिव प्रसाद

गुरुकुल मटिंडू में प्राइमरी विंग का वार्षिक समारोह का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▸▸ खरखौदा

गुरुकुल मटिंडू में शनिवार को प्राइमरी विंग के वार्षिक समारोह का उल्लासपूर्ण आयोजन किया गया। जिसने नन्हे विद्यार्थियों को प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान किया। मुख्य अतिथि एवं पूर्व आईएएस शिव प्रसाद शर्मा, चेयरमैन ब्रिगेडियर सत्य देव तथा प्रधानाचार्या ज्योति मलिक ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। विद्यालय के डायरेक्टर दीपेंद्र दहिया, बीएड प्रिंसिपल डॉ. सुमन बेनीवाल, आनंद प्रकाश, प्राइमरी हेड हर्षा उप प्रधानाचार्य राकेश दहिया इस दौरान उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि डॉ. निर्मल दत्त, ऋषि प्रकाश, उनकी धर्मपत्नी डॉ. मंजू दहिया की गरिमामयी उपस्थिति रही। डॉ. मंजू दहिया गांव सिसाना में चलाए जा रहे वृद्धाश्रम की संचालक हैं। चेयरमैन ब्रिगेडियर सत्यदेव ने अपनी तरफ से 10000 और शिक्षा परिषद गुरुकुल मटिण्डू की तरफ से 21000 और करण सिंह की तरफ से 5100 रुपए की राशि वृद्धाश्रम को दान की गई है। कार्यक्रम के दौरान गुरुकुल के नन्हे-मुन्ने विद्यार्थियों के उत्साहवर्धन एवं प्रोत्साहन के उद्देश्य से प्रत्येक कक्षा से 'शाइनिंग स्टार' को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। मुख्य अतिथि शिव प्रसाद शर्मा ने अपने प्रेरणादायी संबोधन में कहा कि शिक्षा ही वह प्रकाश है जो जीवन के अंधकार को दूर कर सही दिशा प्रदान करती है। उन्होंने विद्यार्थियों से अनुशासन, परिश्रम और ईमानदारी को जीवन का मूल मंत्र बनाने का आह्वान किया। चेयरमैन ब्रिगेडियर सत्य देव ने विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ खेल, संस्कार और चरित्र निर्माण पर भी ध्यान देने का संदेश दिया।

खरखौदा। नन्हे मुन्ने बच्चों को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि

स्वच्छता की अलख जगाने के लिए चलाया जागरूकता अभियान

सोनीपत। स्वच्छता की अलख जगाने के लिए स्कूलों में जागरूकता अभियान चलाया जायेगा ताकि भावी पीढ़ी स्वच्छता के प्रति सजग होकर काम कर सके। हर नागरिक का सहयोग होगा तभी स्वच्छता मिशन पूरा हो सकता है। उक्त विचार नगर निगम के निवर्तमान मेयर राजीव जैन ने हर शनिवार स्वच्छ, सुंदर एवं स्वस्थ सोनीपत अभियान के तहत पुरानी तहसील से कालूपुर चुंगी तक सड़क के दोनों तरफ सफाई करवाते हुए दी। सफाई अभियान के दौरान सिटी थाना परिसर में जमा कूड़ा भी उठवाया गया। जैन ने इस दौरान दुकानदारों को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हुए कूड़ा सड़क की बजाये निगम की गाड़ियों में डालने की अपील की। अभियान में सफाई निरीक्षक सतेंद्र दहिया, पार्षद अतुल जैन, मुकेश एंडी, ब्रह्म प्रकाश, सुनीता कालूपुर, मनोज गुप्ता, सूरज राय जैन अधिवक्ता, वीरेश शांडिल्य, मनोज गर्ग, अनिल ग्रोवर, सुनीता राठी, सचिन अहलावत, नकिन मेहरा अधिवक्ता, जोगेंद्र सिंह, शैलेन्द्र तोमर सहित अनेकों दुकानदार उपस्थित रहे।

छात्राओं को आर्थिक नीतियों-केंद्रीय बजट की भूमिका और महत्व से परिचित करवाया

- बजट 2026 पर कन्या कॉलेज में निबंध व पत्र लेखन प्रतियोगिता

हरिभूमि न्यूज ▸▸ खरखौदा

कन्या महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग द्वारा प्रोफेसर प्रमिला के नेतृत्व में बजट 2026 से उम्मीदें एवं प्रमुख अपेक्षाएं विषय पर एक शैक्षणिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। छात्राओं ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से केंद्रीय बजट के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। साथ ही निबंध लेखन एवं समूह चर्चा गतिविधियों में सभी प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को देश की आर्थिक नीतियों तथा केंद्रीय बजट की भूमिका और महत्व से परिचित कराना एवं उनमें आर्थिक जागरूकता विकसित करना था। छात्राओं ने बजट 2026 से समावेशी विकास और निरंतर आर्थिक प्रगति की अपेक्षा व्यक्त की। प्रमुख अपेक्षाओं में शिक्षा क्षेत्र के लिए अधिक बजट आवंटन, बालिकाओं एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए छात्रवृत्ति योजनाओं का विस्तार, डिजिटल शिक्षा तथा कौशल विकास कार्यक्रमों को प्रोत्साहन शामिल रहा। सामूहिक चर्चा के दौरान छात्राओं ने सोने और चांदी की लगातार बढ़ती कीमतों पर भी चिंता व्यक्त की। डॉ नमिता के द्वारा मुख्य क्षेत्र जिनको यूनियन बजट में अधिक प्राथमिकता मिलनी चाहिए उन क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया जैसे शिक्षा, चिकित्सा, एमएसएमई इत्यादि।

खरखौदा। स्पर्धा में भागीदारी करती महाविद्यालय की छात्रा।

पुलिस ने विद्यार्थियों को सिखाए ट्रैफिक नियम

सोनीपत। पुलिस द्वारा स्टूडेंट पुलिस कैडेट कार्यक्रम के तहत जिले के रावमावि मुरथल और राजकीय विद्यालय कुमासपुर में जागरूकता अभियान चलाया। प्रभारी ट्रैफिक मुरथल निरीक्षक कर्मवीर और एसपीओ सुनील ने छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा की जानकारी दी। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को जेब्रा क्रॉसिंग का सही उपयोग, ट्रैफिक सिग्नल का पालन, सड़क पार करते समय सावधानियां, दुपहिया वाहन पर आईएसआई मार्क हेलमेट और कार में सीट बेल्ट लगाने के महत्व के बारे में बताया गया। 18 वर्ष से कम आयु में वाहन न चलाने, इसके कानूनी परिणामों और संभावित खतरों पर विशेष जोर दिया गया। सत्र सोनीपत पुलिस के राह वीर अभियान का हिस्सा रहा, जिसका उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाना और यातायात अनुशासन विकसित करना है। पुलिस ने विद्यार्थियों से संवाद करते संदिग्ध गतिविधियों या अपराधों की सूचना निडर होकर पुलिस को देने के लिए प्रेरित किया।

सर्वश्रेष्ठ वक्ता महक तो इशिका को सर्वश्रेष्ठ नीति प्रस्तुति का पुरस्कार

हरिभूमि न्यूज ▸▸ खरखौदा

प्रताप स्कूल के विद्यार्थियों ने किया मॉक पार्लियामेंट का शिक्षाप्रद आयोजन

प्रताप स्कूल में कक्षा 9 के विद्यार्थियों द्वारा मॉक पार्लियामेंट का शिक्षाप्रद आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने लोकसभा और राज्यसभा की भूमिका निभाते हुए भारतीय संसद की कार्यवाही को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया। जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक व्यवस्था, संसदीय प्रक्रिया, अनुशासन, नेतृत्व तथा तार्किक वाद–विवाद की परंपरा से परिचित कराना था। कार्यक्रम तृप्ति व सुमन के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। विद्यार्थियों ने प्रश्नकाल, नीति निर्माण, पक्ष–विपक्ष की बहस, समर्थन और विरोध की प्रक्रिया को वास्तविक संसद की तरह प्रस्तुत कर सभी को प्रभावित किया। मॉक पार्लियामेंट के दौरान विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी भूमिकाओं को पूरी गंभीरता और आत्मविश्वास के साथ निभाया। प्रश्नकाल में पूछे गए सवाल, दिए गए उत्तर और नीतियों पर हुई बहसें विद्यार्थियों की गहन समझ और तैयारी को दर्शाती थीं। कार्यक्रम के अंत में विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। सर्वश्रेष्ठ वाद - विवादक का पुरस्कार पारुल को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ वक्ता के रूप में महक को चुना गया।

खरखौदा। विद्यार्थियों को सम्मानित करते प्राचार्या दया दहिया। फोटो : हरिभूमि

छात्रों को समय की पाबंदी के प्रति सजग रहने की दी प्रेरणा

जिला स्तरीय राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय शिविर संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▸▸ सोनीपत

एसएम हिंदू वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सोनीपत में आयोजित जिला स्तरीय राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सप्त दिवसीय शिविर का आज सफलतापूर्वक समापन हर्षोल्लास एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। समापन दिवस की शुरुआत प्रातःकाल योगाभ्यास, वंदे मातरम तथा एनएसएस गीत के साथ हुई, जिसमें सभी स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में जिला शिक्षा अधिकारी नवीन गुलिया पधारे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व जिला कोऑर्डिनेटर नरेश शर्मा ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। विद्यालय प्रशासन एवं एनएसएस कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। अपने संबोधन में नरेश शर्मा ने विद्यार्थियों को अनुशासन, समय की पाबंदी तथा सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा दी। वहीं मुख्य अतिथि नवीन गुलिया ने स्वयंसेवकों को समाज सेवा की भावना को जीवन में अपनाने तथा कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनने का संदेश दिया। शिविर के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले स्वयंसेवकों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही विभिन्न विद्यालयों से आए कार्यक्रम अधिकारियों को भी उनके सहयोग एवं योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

सोनीपत। शिविर के समापन अवसर पर अतिथियों के साथ विद्यार्थी।

खिलेश मिस्टर तो निशिका बनी मिस फेयरवेल

सोनीपत। गेटवे इंटरनेशनल स्कूल के विद्यालय प्रांगण में कक्षा 11 के विद्यार्थियों द्वारा कक्षा 12 के विद्यार्थियों के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य वरिष्ठ विद्यार्थियों के साथ बिताए गए स्वर्णिम पलों को स्मरण करना रहा। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों द्वारा विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिनमें मनमोहक गीत, मधुर संगीत, ऊर्जावान नृत्य एवं मनोरंजक गतिविधियां सम्मिलित रहीं। समारोह में कक्षा 12 के विद्यार्थियों में से मिस्टर फेयरवेल खिलेश एवं मिस फेयरवेल निशिका का चयन किया गया। मिस्टर गेटवे अग्रिम एवं मिस गेटवे जान्या को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रेम कुमार ओझा, उप-प्रधानाचार्या रिम्पी वर्मा एवं समस्त शिक्षकगण उपस्थित रहे।

मातृभाषा पर होना चाहिए गर्व : शर्मा

हरिभूमि न्यूज ▸▸ गोहाना

शहर के गुढ़ा मार्ग स्थित जेएलएन विद्यालय के प्राइमरी विंग के विद्यार्थियों की हिंदी वर्तनी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही मातृभाषा हिंदी के शुद्ध लेखन व पाठन में दक्षता के उद्देश्य से आयोजित की गई। मार्गदर्शन विद्यालय की प्रबंधक कृष्णा शर्मा का रहा। अध्यक्षता एमडी सुनील शर्मा और डॉ. सचिन शर्मा ने की। संयोजन उप प्राचार्य सूरत शर्मा का रहा। कक्षा अनुसार विजेता विद्यार्थियों में कक्षा प्रथम से देवांश, यश्मित, कियाना और साविया, कक्षा द्वितीय से गुंजन, चेष्टा और अद्विक जैन, कक्षा तृतीय से जीवन, वैभव, दीपांशी और तविश, कक्षा चतुर्थ से रीत, तन्वी और तृषा तथा कक्षा पंचम से ऋषभ, गगन और हिमांशी क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे। विजेता विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्राचार्य डॉ. सचिन शर्मा ने कहा कि मातृभाषा हिंदी आज विश्व के लगभग सभी देशों में बोली जाने लगी है। हम सबके लिए हिंदी भाषा को शुद्ध रूप से लिखना, पढना और समझना आवश्यक है। हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए तथा इसकी उपयोगिता का अधिकतम प्रसार होना चाहिए।

गोहाना। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत करते शिक्षकगण। फोटो :हरिभूमि

कार्यक्रम — भगवान विश्वकर्मा को प्रकट दिवस पर किया याद

विश्वकर्मा ब्रह्मांड के पहले वास्तुकार और इंजीनियर : विजय

- नागरिकों ने प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर नमन किया

हरिभूमि न्यूज ▸▸ गोहाना

शनिवार को भगवान विश्वकर्मा को उनके प्रकट दिवस पर याद किया गया। समारोह शहर में महम मार्ग स्थित भगवान विश्वकर्मा चौक में आयोजित हुआ जिसमें नागरिकों ने उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करके नमन किया। समारोह का मार्गदर्शन आजाद हिंद देशभक्त मोर्चा के मुख्य संरक्षक आजाद सिंह दांगी ने किया। अध्यक्षता भगवान विश्वकर्मा कल्याण समिति के अध्यक्ष भूपेंद्र ठेकेदार ने की।

मुख्य अतिथि नगर पार्षद विजय पांचाल ने कहा कि धार्मिक ग्रंथो के अनुसार विश्वकर्मा प्रकट दिवस माघ मास की शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है। सनातन धर्म में भगवान विश्वकर्मा को ब्रह्मांड का पहला वास्तुकार और इंजीनियर माना जाता है। मान्यता है कि सतयुग का स्वर्ग लोक, त्रेता युग की स्वर्ण लंका, द्वापर युग की द्वारिका और हस्तिनापुर का निर्माण उन्होंने ही किया था। नगर पार्षद मुकेश धीमान ने कहा कि भगवान भगवान शिव का त्रिशूल, भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र, और इंद्र का वज्र भी भगवान विश्वकर्मा ने ही बनाया था। उड़ीसा के पुरी में स्थित भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की कास्ठ मूर्तियों का निर्माण भी उन्होंने ही किया था।

भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते नागरिक।

ये रहे मौजूद

इस मौके पर सुरेश पांचाल, ठेकेदार विनोद दांगी, नरेश जांगड़ा, महेंद्र पांचाल, सुरेश पंवार, विजेंद्र प्रजापति, हर भगवान चोपड़ा, सरदार सतनाम सिंह, भानेराम पांचाल, अशोक जांगड़ा व समेराम धीमान विशेष रूप से मौजूद थे।

हर्षोल्लास से मनाया गुरु हर राय साहब का प्रकाश दिवस

हरिभूमि न्यूज ▸▸ सोनीपत

गुरुद्वारा गुरु तेग बहादुर साहिब, राज मोहल्ला में सातवें गुरु हर राय साहब का प्रकाश दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर रागी जत्था रागी सिंह, तनवीर सिंह ने गुरु साहब के इतिहास का संगत को श्रवण कराया। उन्होंने बताया कि गुरु हर राय साहब के पिता का नाम बाबा गुरुदत्ता था एवं माता का नाम माता नानकी थी। वह छठे गुरु गुरु हरगोबिंद साहब के पौत्र थे। गुरु को प्रकृति से बहुत अधिक प्यार था। उन्होंने कीरतपुर साहब में प्राकृतिक औषधियां का बहुत बड़ा चिकित्सालय बनवाया था। वह गुरबाणी से अत्यधिक प्यार करते थे व उनके पुत्र ने गुरबाणी की एक पंक्ति बदलने पर उसे गुरु गद्दी से वंचित कर दिया गया था। महासचिव परमजीत सिंह ने संगत को गुरु साहब के प्रकाश दिवस के बारे में जानकारी दी।

संत शिरोमणि की जयंती पर रक्तदान शिविर आज

सोनीपत। सिंबल ऑफ नॉलेज अंबेडकर एजुकेशनल एंड सोशल रिफॉर्म आर्गेनाइजेशन की बैठक का शनिवार को आयोजन किया गया। बैठक में बताया गया कि संत शिरोमणि गुरु रविदास जयंती के मौके पर 1 फरवरी को रेडक्रॉस सोसायटी के तत्वावधान में सातवें रक्तदान शिविर का आयोजन संत गुरुरविदास मंदिर लाल दरवाजा में किया जाएगा। बैठक की अध्यक्षता उपप्रधान मनीष सिंहमार ने की। मनीष ने कहा कि इस बैठक का उद्देश्य रक्तदान शिविर को सफल बनाना है। मनीष, रणजीत सिंह, धर्मवीर, संत रविदास मंदिर के प्रधान कृष्ण भाटिया आदि मौजूद रहे।

- संत गुरु रविदास मंदिर लाल दरवाजा में आयोजन

खबर संक्षेप

इंडियन मॉडर्न स्कूल में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम

सोनीपत। इंडियन मॉडर्न स्कूल में शनिवार को तरंग थीम पर आधारित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि बिजेन्द्र मान द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। रेट्रो सॉन्ग हरियाणवी, पंजाबी तथा राजस्थानी नृत्यों की शानदार प्रस्तुतियों ने मंच को रंग, उमंग और उत्साह से भर दिया।

चोरी की मोटरसाइकिल सहित दो गिरफ्तार

गोहाना। थाना शहर गोहाना की पुलिस ने चोरी की गई मोटरसाइकिल सहित दो आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। आरोपित गोहाना निवासी बिरन पुत्र रमेश व गोपी पुत्र हरलाल हैं।

गांव बड़ौता निवासी पवन पुत्र राजमल की गोहाना में सोनीपत मार्ग से मोटरसाइकिल चोरी हो गई थी। उनकी शिकायत पर थाना शहर गोहाना में मोटरसाइकिल चोरी की शिकायत दर्ज की गई थी।

अपहरण व रुपये लूटने की घटना में आरोपी काबू

गोहाना। क्राइम यूनिट गोहाना की पुलिस ने व्यापारी का अपहरण करके रुपये लूटने की घटना में आरोपित इंद्रगढ़ी कालोनी के अंकित उर्फ टीना को गिरफ्तार किया। न्यायालय के आदेश पर उसे दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया।

दो अलग-अलग मामलों में दो उद्घोषित अपराधी दबोचे

सोनीपत। सोनीपत पुलिस ने दो अलग-अलग मामलों में दो उद्घोषित अपराधियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। पहले मामले में थाना राई पुलिस ने एक्सीडेंट प्रकरण में संलिप्त उद्घोषित अपराधी को गिरफ्तार किया। दूसरे मामले में थाना खरखौदा पुलिस ने वर्ष चेक बाउंस मामले में उद्घोषित अपराधी को गिरफ्तार किया।

350 से ज्यादा फाइलों के कार्य हो रहे थे बाधित

मुरथल विवि में रजिस्ट्रार की नियुक्ति अटके कार्य पूरे होने से मिलेगी राहत

कर्मचारियों ने कुलाधिपति एवं राज्यपाल से रजिस्ट्रार की इस्तीफा प्रक्रिया जल्द पूर्ण कराकर सक्षम अधिकारी को पद सौंपने की उठाई थी मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सोनीपत। मुरथल स्थित दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय।

मुरथल स्थित दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय को शनिवार को कार्यकारी रजिस्ट्रार मिलने से स्टाफ सदस्यों, कर्मचारियों व विद्यार्थियों ने राहत की सांस ली है। सभी को आस है कि उनके अटके कार्य जल्द पूर्ण हो सकेंगे। विश्वविद्यालय में 2 माह से लंबित फाइलों में विद्यार्थियों से लेकर कर्मचारी तक प्रभावित थे। इनके डिग्री, नियुक्ति, छात्रवृत्ति, वेतन व अन्य कई कार्यों में रुकावट बनी होने से सभी को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। कर्मचारियों व विद्यार्थियों ने बताया कि विश्वविद्यालय में 2 माह पहले रजिस्ट्रार के इस्तीफे के बाद उनके सामने प्रशासनिक संकट उत्पन्न हो गया था। रजिस्ट्रार की अनुपस्थिति में विभिन्न कार्यों की करीब 350 से ज्यादा फाइलों का काम प्रभावित हो गया था। आरोप है कि इस समय अवधि में मुरथल विश्वविद्यालय प्रबंधन ने भी मामले में हस्तक्षेप कर कोई खास रूचि नहीं दिखाई। न ही किसी वैकल्पिक सक्षम अधिकारी को स्पष्ट रूप से पूर्ण प्रभार सौंपा गया है। प्रशासनिक अनिश्चितता के कारण ही करीब 350 से अधिक फाइलें लंबित पड़ी रही, जिनमें छात्रों, शोधार्थियों एवं कर्मचारियों से जुड़े महत्वपूर्ण मामले शामिल हैं। साथ ही लंबित फाइलों में डिग्री, थीसिस, नियुक्ति, पदोन्नति, वेतन, छात्रवृत्ति व अन्य आवश्यक प्रशासनिक स्वीकृतियां शामिल हैं। इसका सीधा असर छात्रों के भविष्य व कर्मचारियों के अधिकारों पर पड़ रहा था। मामले को लेकर विश्वविद्यालय से जुड़े लोगों ने विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं राज्यपाल से तत्काल हस्तक्षेप कर समाधान करवाने की मांग की थी, ताकि रजिस्ट्रार के इस्तीफे की प्रक्रिया जल्द पूर्ण कर किसी सक्षम अधिकारी को पदभार सौंपा जा सके।

कुलाधिपति ने नियुक्ति कर निभाया कर्तव्य

मुरथल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं राज्यपाल प्रोफेसर असीम कुमार घोष ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तत्परता दिखाकर अपना कर्तव्य निभाया है। उन्होंने डॉ. बीआर आंबेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, सोनीपत के रजिस्ट्रार प्रोफेसर डॉ. आशुतोष मिश्रा को 31 जनवरी से दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल के रजिस्ट्रार का कार्यकारी प्रभार सौंपा है। साथ ही कुलाधिपति ने निर्देश दिए हैं कि विश्वविद्यालय में नियमित नियुक्ति तक डॉ. आशुतोष अपने वर्तमान कर्तव्यों के अतिरिक्त दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल के रजिस्ट्रार के कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे।

इन उच्चाधिकारियों को भेजी आदेश की प्रति

- मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव
- उच्च शिक्षा मंत्री के निजी सचिव
- उच्च शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव
- तकनीकी शिक्षा विभाग के महानिदेशक
- दीनबंधु छोटू राम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मुरथल के कुलपति
- डॉ. बीआर आंबेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, सोनीपत के कुलपति
- डॉ. बीआर आंबेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, सोनीपत के रजिस्ट्रार

जल्द होगा समाधान

विश्वविद्यालय में नियुक्त रजिस्ट्रार मेडिकल लीव पर गए थे। मामले को लेकर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं राज्यपाल प्रोफेसर असीम कुमार घोष को अवगत कराया गया था। कुलाधिपति के निर्देश पर डॉ. बीआर आंबेडकर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय, सोनीपत के रजिस्ट्रार प्रोफेसर डॉ. आशुतोष मिश्रा को मुरथल विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार का कार्यकारी प्रभार सौंपा गया है। उनके सहयोग से जल्द कर्मचारियों व विद्यार्थियों की समस्या का समाधान करवाया जाएगा।

- श्रीप्रकाश सिंह, कुलपति, मुरथल विश्वविद्यालय

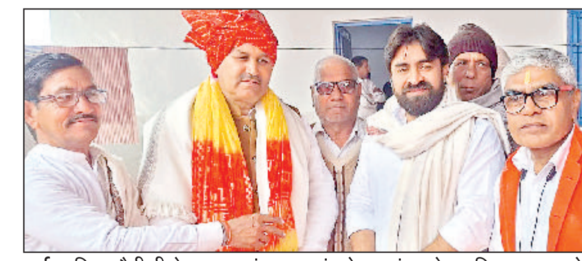

राई। दहिया चौबीसी के प्रधान एवं नाहरा गांव के सरपंच उमेश दहिया भाजपा नेता मास्टर सतनारायण आंतिल का सम्मान करते हुए।

दादा देव का धार्मिक स्थल लोगों की आस्था का केंद्र : पवन विधायक

राई। नाहर गांव में दादा देव के वार्षिक महोत्सव के अवसर पर विशाल मेले एवं भंडारे का भव्य आयोजन किया गया। महोत्सव में क्षेत्रभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे और दादा देव के दरबार में माथा टेककर सुख-समृद्धि की कामना की। महोत्सव में विधायक पवन खरखोदा के अलावा भाजपा युवा नेता वीरेंद्र कौशिक, भाजपा नेता मास्टर सतनारायण आंतिल सहित दहिया चौबीसी के अनेक गणमान्य लोग कार्यक्रम में पहुंचे। अतिथियों के नाहर गांव पहुंचने पर दहिया चौबीसी के प्रधान एवं नाहरा गांव के सरपंच उमेश दहिया ने सभी का फूलमालाओं के साथ स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान दादा देव की पूजा-अर्चना के साथ भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया, जिससे माहौल भक्तिमय हो गया। विशाल भंडारे में हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। विधायक पवन खरखोदा ने अपने संबोधन में कहा कि दादा देव का धार्मिक स्थल लोगों की आस्था का केंद्र है। व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में जयसिंह पहलवान, राकेश पार्षद, कुलबीर, कष्ट निवारण समिति के सदस्य गोपाल वर्मा, सुल्तान, महावीर सहित अनेक गणमान्य ग्रामीणों का विशेष सहयोग रहा।

तीरंदाजी में छाई रौनक स्कूल की छात्राएं

गन्नौर। रौनक पब्लिक स्कूल गन्नौर की छात्राओं ईशा एवं हिमानी ने ओलंपिक तीरंदाजी संगठन द्वारा सोनीपत में आयोजित ट्रायल प्रतियोगिता में तीरंदाजी प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। दोनों ही खिलाड़ियों के प्रभावशाली प्रदर्शन के आधार पर उन्हें हरियाणा ओलंपिक तीरंदाजी संघ द्वारा राज्य स्तरीय तीरंदाजी प्रतियोगिता के लिए चयनित किया गया। प्रधानाचार्या रजनी शर्मा ने बताया कि राज्य स्तरीय प्रतियोगिता 1 से 3 फरवरी तक पलवल में आयोजित की जाएगी, जिसमें प्रदेश भर से चयनित श्रेष्ठ खिलाड़ी भाग लेंगे। प्रधानाचार्या रजनी शर्मा ने दोनों छात्राओं को उनकी सफलता पर हार्दिक बधाई दी एवं आगामी राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए उज्ज्वल भविष्य और श्रेष्ठ प्रदर्शन की कामना की। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि विद्यार्थियों की मेहनत, अनुशासन और निरंतर अभ्यास का परिणाम है तथा अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणास्रोत बनेगी।

बीआर ग्लोबल के छात्रों का स्वास्थ्य जांचा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

- विवान अस्पताल के डॉ आशीष चौधरी व डॉ रुचि चौधरी के नेतृत्व में चिकित्सकों ने की जांच

गन्नौर। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की स्कूल में जांच करते चिकित्सक।

खेड़ी रोड स्थित बीआर ग्लोबल विद्यालय में विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को लेकर स्वास्थ्य जांच मेले का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों की आंख, नाक और गले की, कद, वजन और नाड़ी की गति की भी जांच की गई। स्वास्थ्य जांच शिविर में रेलवे रोड स्थित विवान अस्पताल के डॉ आशीष चौधरी व डॉ रुचि चौधरी के नेतृत्व में अनुभवी चिकित्सकों और उनकी टीम ने विशेष भूमिका निभाई। टीम ने आधुनिक उपकरणों की सहायता से बच्चों की जांच की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। चिकित्सकों ने विद्यार्थियों को संतुलित आहार लेने, नियमित व्यायाम करने, पर्याप्त नींद लेने और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखने की सलाह दी। इसके साथ ही हाथ धोने, साफ पानी पीने और आसपास स्वच्छ वातावरण बनाए रखने के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया। विद्यालय के चेयरमैन राकेश यादव ने विवान अस्पताल की चिकित्सा टीम का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि बच्चों का स्वस्थ रहना ही किसी भी समाज की मजबूत नींव होता है। शैक्षणिक निदेशिका पूजा पहल , उप प्रधानाचार्या मंजू सहरावत ने विद्यार्थियों को चिकित्सकों द्वारा दी गई सलाह का पालन करने के लिए प्रेरित किया।

फर्जी रजिस्ट्री घोटाले में एफआईआर पर उठाए सवाल

सोनीपत। गन्नौर में सामने आए करोड़ों रुपये के फर्जी रजिस्ट्री घोटाले को लेकर न्याय युद्ध मंच के संस्थापक और सामाजिक कार्यकर्ता अधिवक्ता देवेन्द्र गौतम ने दर्ज एफआईआर पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले में विक्रेता, खरीदार, गवाह और डीड राइटर को तो एफआईआर में शामिल कर लिया गया, लेकिन रजिस्ट्री प्रक्रिया की अहम कड़ी नायब तहसीलदार का नाम जानबूझकर बाहर रखा गया है। देवेन्द्र गौतम ने कहा कि जब छोटी जमीन की रजिस्ट्री में भी नायब तहसीलदार की जांच और नोटिंग अनिवार्य होती है, तो करोड़ों की जमीन की रजिस्ट्री उनकी भूमिका के बिना संभव नहीं हो सकती।

शैक्षणिक और खेल स्पर्धाओं में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी सम्मानित

- राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल में मेधावी विद्यार्थियों का किया सम्मान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

राजकीय मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शुक्रवार को शिक्षा, संस्कृति और खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को विभिन्न शैक्षणिक व खेल प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को मेडल व शील्ड देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मक भावना के साथ-साथ सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना रहा। विद्यालय के प्रधानाचार्य रूपेंद्र पूनिया ने विद्यार्थियों को शिक्षा का महत्व बताते हुए कहा कि शिक्षा ही जीवन का मूल आधार है। सम्मान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में कुश्ती प्रतियोगिता में परीक्षित व समर ने प्रथम स्थान, बॉक्सिंग प्रतियोगिता में रितिक ने प्रथम स्थान, रेस में लक्षिता ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिला स्तरीय प्रतियोगिता में विद्यालय की फुटबॉल टीम ने तृतीय स्थान प्राप्त कर सराहनीय प्रदर्शन किया। लेखन प्रतियोगिता में कुमारी दीक्षा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में उप प्रधानाचार्य डॉ. राजेश शर्मा ने विद्यार्थियों को आगामी परीक्षाओं के लिए निरंतर मेहनत करने का संदेश दिया।

वन कर्मचारी राष्ट्रव्यापी हड़ताल में होंगे शामिल

सोनीपत। वन कर्मचारी संघ हरियाणा ने 12 फरवरी को प्रस्तावित राष्ट्रव्यापी हड़ताल में प्रदेश के वन कर्मचारियों की भागीदारी की घोषणा की है। संयुक्त बयान में संघ के प्रेस प्रवक्ता आनंद शर्मा और जिला प्रधान भगत सिंह ने कहा कि वनों और वन्य प्राणियों की रक्षा मानव सभ्यता के अस्तित्व से जुड़ी है, लेकिन देश के कई राज्यों में विकास के नाम पर अंधाधुंध वन कटाई की जा रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र और राज्य स्तर पर वनीकरण व सुरक्षा जैसे कार्यों को निजी कंपनियों और कारपोरेट को सौंपने की तैयारी है, जबकि वन विभाग में खाली पदों पर भर्ती नहीं की जा रही। वन मित्र योजना और टेंडर प्रणाली के माध्यम से सरकारी वन भूमि पर गतिविधियां कराई जा रही हैं, जिससे पारंपरिक वन संरक्षकों की भूमिका कमजोर हो रही है। संघ ने आम जनता को आगाह किया कि अब निजी भूमि पर खड़े पेड़ों की कटाई से पहले भी वन विभाग से अनुमति लेना अनिवार्य है। बिना अनुमति कटाई पर वन अधिनियम के तहत कार्रवाई होगी। उन्होंने विधायकों से भी फॉरेस्ट एक्ट के अनुरूप ही कार्य करने की अपील की और कर्मचारियों पर दबाव न बनाने की चेतावनी दी।

आनंद शर्मा।

कंटेनर-गाड़ी की टक्कर से लगा जाम

गन्नौर। गन्नौर फ्लाईओवर पर बाल भवन इंटरनेशनल स्कूल के सामने शनिवार को एक तेज रफ्तार कंटेनर ने साइड में चल रही इनोवा कार को टक्कर मार दी। हादसे में इनोवा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई, जबकि कंटेनर चालक मौके से फरार हो गया। राहत की बात यह रही कि इस दुर्घटना में कोई भी व्यक्ति चोटिल नहीं हुआ। टक्कर के बाद फ्लाईओवर पर यातायात बाधित हो गया और दोनों ओर वाहनों की लंबी कतारें लग गई। सूचना मिलते ही डायल 112 की टीम मौके पर पहुंची। इसके बाद बड़ी थाना पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंची और स्थिति का जायजा लिया। पुलिस ने क्षतिग्रस्त इनोवा को सड़क से हटवाकर यातायात सुचारू कराया, जिसके बाद जाम खुल सका।

नव ज्योति शिक्षा सदन की टीम ने तीनों मुकाबले जीते

खेल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए जरूरी : राजेंद्र

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

गन्नौर। इंटर स्कूल वॉलीबॉल प्रतियोगिता के प्रतिभागी छात्र अपने कोच के साथ ।

नव ज्योति शिक्षा सदन में इंटर स्कूल वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में नव ज्योति शिक्षा सदन एवं बैंथनी कॉन्वेंट स्कूल की टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। नव ज्योति शिक्षा सदन की टीम का नेतृत्व अंशुल ने किया, जबकि बैंथनी कॉन्वेंट स्कूल की टीम की अगुवाई पारस ने की। प्रतियोगिता के दौरान कुल तीन मैच खेले गए, जिनमें नव ज्योति शिक्षा सदन की टीम ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए तीनों मुकाबलों में जीत दर्ज की। खिलाड़ियों ने अनुशासन और समर्पण के साथ खेलते हुए दर्शकों की तालियां बटोरीं। नव ज्योति शिक्षा सदन के छात्र अंशुल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए खेल भावना का परिचय दिया। उन्होंने अपनी टीम को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। अंशुल पूर्व में भी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम रोशन कर चुका है। मैचों में रेफरी की भूमिका अशोक कादियान एवं प्रदीप कौशिक ने निभाई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य राजेंद्र कौशिक ने खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा कि खेल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

परीक्षा की तैयारी, पाठ्यक्रम को समझना आवश्यक : मान

- विद्यार्थी परीक्षा की अच्छी तैयारी के लिए अध्ययन योजना बनाएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

परीक्षा की तैयारी के लिए पाठ्यक्रम को समझना बेहद जरूरी है। इसके साथ ही अध्ययन योजना बनानाभी बहुत जरूरी है। अध्ययन योजना में विद्यार्थी समय सारणी बनाएं और अध्ययन को स्मार्ट रूप देने के साथ अन्य बिन्दुओं पर काम करें। विद्यार्थियों को ये टिप्स गोहाना-खरखौदा मार्ग स्थित मान इंटरनेशनल स्कूल के एमडी दीपक मान ने दिए। दीपक मान ने कहा कि फरवरी के महीने में वार्षिक परीक्षाएं शुरू हो जाएंगी। ऐसे में यह जरूरी हो जाता है कि विद्यार्थी परीक्षा पर फोकस करें। परीक्षा की प्रभावी तैयारी के लिए अध्ययन को स्मार्ट रूप दें। इसमें कुछ समय पढ़ाई करने के बाद एक छोटा ब्रेक लें और कठिन विषयों को पहले पढ़ें। विद्यार्थी पिछले वर्षों के प्रश्न पत्रों को हल करके अवश्य देखें। इससे विद्यार्थियों को परीक्षा में प्रश्न पत्र हल करने में काफी मदद मिलेगी। एमडी दीपक मान ने कहा कि इन सबसे जरूरी है समय सारणी बनाना। इसमें विद्यार्थी यह सुनिश्चित करें कि किस विषय को कितना समय देना है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी समय पर सोएं, पूरी नींद लें, पौष्टिक आहार का सेवन करें।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10× 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

जागरूकता ट्रेनों पर पथराव जैसी घटनाओं को रोकने के लिए चलाया अभियान

आरपीएफ कर्मियों ने रेल लाइन के साथ लगती कॉलोनियों के पास युवाओं को किया जागरूक

बच्चे खेल-खेल में ट्रेनों पर फेंक देते हैं पत्थर, सहयोग से लगेगी रोक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

रेलवे पुलिस बल (आरपीएफ) ने दिल्ली-अंबाला रूट पर सोनीपत क्षेत्र में ट्रेनों पर होने वाली पत्थरबाजी, रेल लाइन पर अलार्म चेन पुलिंग (एसीपी) जैसी घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए शनिवार को ऑपरेशन दोस्ती के तहत जागरूकता अभियान चलाया। अभियान को लेकर आरपीएफ थाना प्रभारी इंस्पेक्टर संगम के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। उप निरीक्षक शहाबुद्दीन, धर्मेंद्र कुमार के नेतृत्व में आरपीएफ कर्मियों ने रेल लाइन के साथ लगती कॉलोनियों, सांदल कलां व राजलू गढ़ी स्टेशन के पास लोगों को जागरूक किया।

सोनीपत। सोनीपत में रेल लाइन के साथ कॉलोनी में युवाओं को ट्रेनों पर होने वाली पत्थरबाजी की घटनाओं को लेकर जागरूक करते आरपीएफ कर्मी।

राष्ट्रीय संपत्ति के साथ यात्रियों को भी होता नुकसान

अभियान के दौरान उप निरीक्षक शहाबुद्दीन व धर्मेंद्र कुमार ने लोगों व खासकर युवाओं को ट्रेनों पर पत्थरबाजी न करने के प्रति जागरूक किया। उन्होंने बताया कि ट्रेनों पर पत्थरबाजी करना कानूनी अपराध है। इससे राष्ट्रीय संपत्ति के साथ यात्रियों को भी नुकसान होता है। रेलवे को आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है। ऐसा करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने लोगों को जागरूक करते हुए बताया कि कई बार बच्चे खेल-खेल में ट्रेनों पर पत्थरबाजी कर देते हैं। अगर सभी लोग सहयोग करें तो ट्रेनों पर पत्थरबाजी की घटनाओं पर पूर्ण रूप से रोक लगाई जा सकती है। सोनीपत क्षेत्र में वंदे भारत एक्सप्रेस व अमृतसर शताब्दी एक्सप्रेस जैसी ट्रेनों पर राठधना-सोनीपत स्टेशन के बीच पत्थरबाजी करने वालों पर कानूनी कार्रवाई की गई है। आरपीएफ पत्थरबाजी की घटनाओं को रोकने के लिए रेल लाइन के साथ लगते क्षेत्रों में लोगों को जागरूक कर रही है। टीम में सहायक उप निरीक्षक हमराह, रिछपाल सिंह, कांस्टेबल नरेश कुमार, मनोज कुमार, जगत सिंह शामिल रहे।

दुनिया की भीड़ में क्यों बढ़ रहा है अकेलापन

देश-दुनिया की आबादी भले ही दिनों-दिन बढ़ रही हो, लेकिन इसके उलट लोगों का अकेलापन भी बढ़ रहा है। अकेलेपन की समस्या विश्वव्यापी है। भारत समेत अनेक देशों के लोग इस समस्या का सामना कर रहे हैं। अकेलेपन का हमारे स्वास्थ्य ही नहीं पूरे जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि इसके कारणों को जाना जाए और इसे दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाए।

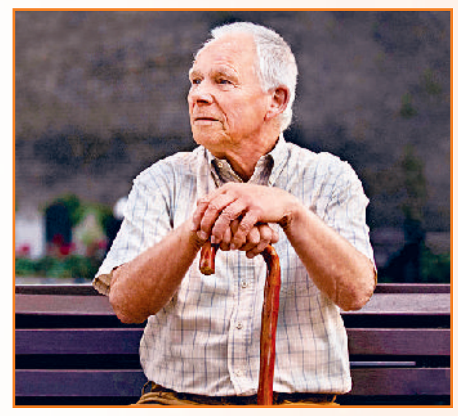

कवर स्टोरी

एस. भाग्यम शर्मा

यह सही है कि दुनिया में आठ अरब से अधिक और हमारे अपने देश में 140 करोड़ से अधिक लोग रहते हैं। लेकिन दुख की घड़ी में शायद ही एक कंधा ऐसा मिले, जिस पर सिर रखकर हम रो सकें। सोशल मीडिया पर भले ही हमारे हजारों दोस्त होंगे, फॉलोअर्स होंगे, लेकिन असल जिंदगी में एक भी हमारे साथ नहीं होता। यानी आज लोगों की भीड़ में भी हर कोई खुद को अकेला महसूस कर रहा है।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

अगर कोई शारीरिक बीमारी हो तो इसका असर दूसरों को नजर आता है। अकेलेपन का दुष्प्रभाव धूम्रपान और मोटापे की तरह शरीर पर नजर नहीं आता है। दरअसल, अकेलापन हमारे मन को बीमार बना देता है। अकेलापन एक दिन में 15 सिगरेट पीने से भी ज्यादा खतरनाक असर हमारे स्वास्थ्य पर डालता है। अकेलापन समय से पहले मृत्यु के खतरे को 25% तक बढ़ा देता है। अकेलेपन से ब्रेन स्ट्रोक और हृदय रोग का खतरा 30% तक बढ़ता है। यह डिमेंशिया के खतरे को 50% तक बढ़ा देता है, इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि समय रहते अकेलेपन की इस बीमारी को पहचान लें और यह जानें कि कहीं आप भी अकेलेपन के अंधेरे में खोते तो नहीं जा रहे हैं।

दुनिया भर में लोग हैं परेशान

वर्ष 2023 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अकेलेपन को एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट घोषित किया था। अकेलेपन को परिभाषित करते हुए डब्ल्यूएचओ ने कहा था कि अकेलापन व्यक्ति की अपनी भावनात्मक पीड़ा है, जो सामाजिक अलगाव और सार्थक रिश्तों की कमी से पैदा होती है। आज के दौर में अकेलापन दुनिया भर में एक गंभीर बीमारी का रूप ले चुका है। जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में कई लोग इस कदर अकेले हो चुके हैं कि अगर उनकी मृत्यु भी हो जाए तो कई-कई दिनों तक बाहरी दुनिया को उनकी मौत के बारे में पता ही नहीं चलता।

वहां से आई खबरों के अनुसार पिछले साल जापान में करीब 76,000 लोगों की उनके घर में अकेले रहते हुए मौत हुई। 4,000 लोग ऐसे थे, जिनके मरने के करीब एक महीने के बाद बाहर के लोगों को उनकी डेड बॉडीज मिलीं। जापान में तो अकेलेपन को दूर करने के लिए ज्यादा उम्र के लोग कई बार जान-बूझकर अपराध करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं, जिससे उन्हें सजा मिले और सजा के बाद वे जेल में दूसरे लोगों से मिलकर कुछ बातचीत कर सकें, उनका अकेलापन दूर हो, उनका मन लग सके।

बढ़ रहे हैं एकल परिवार

भारत में भी अकेलापन तेजी से फैल रहा है। इसकी मुख्य वजह है भारतीय समाज में टूटते संयुक्त परिवार। पहले के दौर में हमारे घर-परिवार में साथ रहने वाले अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी के साथ हम अपना सुख-दुख शेयर कर लिया करते थे। लेकिन अब वह दौर नहीं रहा। अब संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है, जहां परिवार में पति-पत्नी ही रहते हैं। कई कपल तो बच्चे तक पैदा नहीं करना चाहते। बच्चे इसलिए नहीं पैदा करना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं कि अगर बच्चे हुए तो उनकी देखभाल करने वाला परिवार में कोई नहीं है। महानगरों में 'ड्यूल इनकम-नो किड्स' का चलन बढ़ रहा है।

बढ़ती सामाजिक दूरी भी है वजह

पिछली सदी तक हम सब अनजान लोगों से भी बातचीत कर लिया करते थे। कोई रास्ता पूछता था तो बड़े मन से उसे रास्ता बताते, कई बार तो उन्हें उनके गंतव्य तक छोड़ कर आ जाते थे। बाजार जाते तो किराने की दुकान या सब्जी की दुकान पर दुकानदार से बातचीत कर लिया करते थे। अड़ोसी-पड़ोसी से उनका हाल-चाल पूछ लिया करते थे। चाय की दुकानों पर जाने-अंजाने लोग भी खूब बतियाते थे। लेकिन अब ऑनलाइन शॉपिंग के बढ़ते ट्रेंड से लोगों का बाजार आना-जाना भी बहुत कम हो गया है। सब इतने व्यस्त हो गए हैं कि किसी के पास समय ही नहीं रह गया है, एक-दूसरे की खबर लेने का।

बच्चे-युवा भी हो रहे प्रभावित

2021 के ग्लोबल सर्वे के मुताबिक, अकेलेपन से प्रभावित होने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश भारत है। इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत के शहरों में 43% लोग अकेलापन महसूस करते हैं। चिंताजनक बात यह है कि 13 से 15 साल की उम्र के 25 % बच्चे भी अकेलापन अनुभव कर रहे हैं। सोशल मीडिया की वजह से भी अकेलापन तेजी से बढ़ रहा है। कई स्टडीज में सामने आया है कि सोशल मीडिया की लत, युवाओं में अलगाव, अकेलापन और डिप्रेशन को बढ़ा रही है।

मशीनी हो रही भावनाएं

अकेलापन इसलिए भी बढ़ रहा है कि लोग एक-दूसरे के साथ अपनी भावनाएं साझा नहीं करते हैं। सोशल मीडिया में कोई इमोजी भेजकर खुद को दायित्वमुक्त समझ लेते हैं। आजकल लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किसी की आंखों में आंख डालने की जरूरत नहीं है। किसी का हाथ थामने की जरूरत नहीं है। लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इमोजीज भेजना ही पर्याप्त है। यानी जब हम दुखी महसूस करते हैं तो हमारे साथ किसी की वास्तविक भावनाओं के स्थान पर ढेरों इमोजीज होते हैं।

अकेलापन दूर करने का करें प्रयास

हमें बचपन से ही सिर्फ यह सिखाया जाता है कि सफलता ही खुशी का सबसे बड़ा पैमाना है और जीवन में हर कीमत पर सफल होना सबसे जरूरी है। जो सफल है, वह खुश भी रह लेगा। हमें रिश्तों की अहमियत नहीं सिखाई जाती। सफलता और अधिक से अधिक पैसा, सुख-सुविधएं अर्जित करने की अंधी दौड़ में ज्यादातर लोग अपने रिश्तों को पीछे छोड़ देते हैं। जाहिर है, इससे जीवन में अकेलापन आएगा ही। अकेलापन किसी सफलता से या दौलत कमाने से या शानदार करियर से नहीं, अपनों के साथ होने से दूर होता है। इसलिए अगर आप भी अकेलापन महसूस करते हैं तो सोशल मीडिया पर ही नहीं अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलने उनके घर जाइए, उन्हें अपने घर बुलाइए। परिवार के साथ समय बिताइए। अंजान लोगों से भी बात करने में न हिचकिचाइए। यही नहीं अगर आपके परिवार में या आस-पास कोई ऐसा व्यक्ति है, जो अकेलापन महसूस कर रहा है तो उससे बात कीजिए। उसके अकेलेपन को दूर करने का प्रयास कीजिए। जरूरत पड़ने पर काउंसलर की मदद भी ले सकते हैं। ऐसा करने से उस व्यक्ति का अकेलापन तो दूर होगा ही, आपको भी आत्मीय खुशी, संतुष्टि मिलेगी। *

कई देशों में हो रही नई पहल

अकेलेपन की समस्या से निपटने के लिए अलग-अलग देशों में अब कई तरह की पहल की जा रही है। जैसे दक्षिण कोरिया में बुजुर्गों के लिए हैप्पी कैब्स चलाई जा रही हैं। यह एक कैब सर्विस है, जिसमें बुजुर्ग लोग अंजान लोगों के साथ बैठकर घूमने जा सकते हैं। उनसे बातचीत कर सकते हैं, अपने सुख-दुख साझा कर सकते हैं। इससे उन्हें अपना अकेलापन दूर करने में मदद मिलती है। इसी तरह अकेलेपन की समस्या के समाधान को तलाशने के लिए ब्रिटेन ने वर्ष 2018 में ही लोनलीनेस मिनिस्टर की नियुक्ति शुरू कर दी थी। एक अलग मंत्रालय, एक अलग मंत्री, जो सिर्फ यह देखेगा कि देश में लोगों के अकेलेपन को कैसे दूर किया जा सकता है? वहां अकेलेपन से जूझ रहे लोगों को काउंसिलिंग और मेडिकल सपोर्ट उपलब्ध कराए जाते हैं।

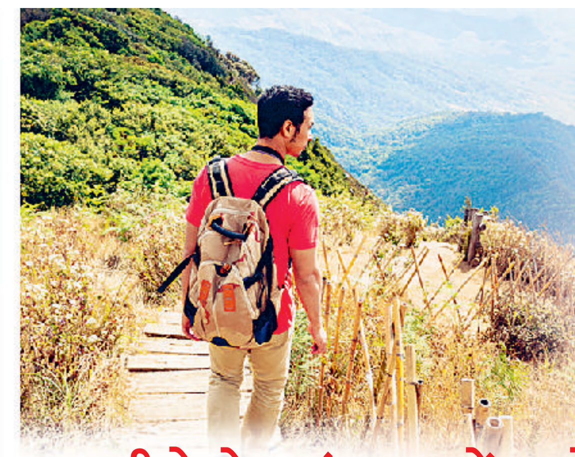

जिंदगी को खुशमिजाज बनाना हमारे ही हाथों में होता है। अगर हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ बदलाव कर लें, कुछ आदतों को शामिल कर लें तो हमारी जिंदगी खुशमिजाज बन सकती है। ऐसा किस तरह हो सकता है, जानिए।

जीने के अंदाज में करें बदलाव खुशमिजाज हो जाएगी जिंदगी

लाइफस्टाइल

शिखर चंद जैन

हमारा दिमाग ही हमारी सोच और नजरिए का स्रोत होता है। जब दिमाग अशांत या उद्वेलित रहता है तो हमें हर चीज में उथल-पुथल, नकारात्मकता और बुराई नजर आती है। लेकिन जब दिमाग शांत रहता है, हम खुशमिजाज रहते हैं तो हमें हर चीज सकारात्मक अच्छी और सही लगती है। खुशमिजाजी और सुकून के लिए कुछ बातें और आदतें अपनानी जरूरी हैं।

लोगों से बनाए अच्छे संबंध

भले ही सबको खुश रखना दुनिया का सबसे कठिन काम है लेकिन सबके साथ खुश रहना दुनिया का सबसे आसान काम है। हार्वर्ड स्टडी ऑफ एडल्ट डेवलपमेंट के डायरेक्टर और मनोचिकित्सक रॉबर्ट वालडिंगर का कहना है कि लोगों के साथ मजबूत और मधुर संबंध खुशी की प्रमुख वजह बन सकते हैं। ये लोग रोमांटिक पार्टनर, आपके दोस्त, बच्चे, सहकर्मी, पड़ोसी, रिश्तेदार या भाई-बहन कोई भी हो सकते हैं। भले ही हम सब स्वतंत्रता को खास मानते हों, लेकिन यह ना भूलें कि हम सब एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। जब हम अपने इर्द-गिर्द मौजूद लोगों के साथ अच्छे संपर्क रखते हैं तो मानसिक खुशी तो मिलती ही है, एक बड़ा सपोर्ट सिस्टम भी मिलता है, जो हमें हर तरह से सुकून देता है।

अजनबियों से करें बातचीत

ओटावा (कनाडा) की कार्लटन यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञानी जॉन जेलवेंसकी कहते हैं कि आपको एक्सट्रोवर्ट होना चाहिए। अंतर्मुखी, गंभीर और चुप्पी साध कर रहने वाले लोग उदास रहते हैं, जबकि सबसे आसानी से घुल-मिल जाने वाले और अजनबी लोगों से बातचीत करने की कला जानने वाले अकसर खुशमिजाज रहते हैं। साथ ही ऐसे लोग आसानी से अपना सोशल सर्किल और बिजनेस सर्किल भी बढ़ा लेते हैं, जिससे इन्हें सफलता मिलती है। जाहिर है, सफलता भी खुशी मिलने की एक महत्वपूर्ण वजह है।

पालतू के साथ समय बिताएं

वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन में पाया गया कि पालतू जानवर के साथ बिताया गया 10 मिनट का समय भी दिमाग को सुकून देने वाला होता है। इससे कार्टिसोल नामक स्ट्रेस हार्मोन का स्तर गिरता है। अमेरिकी नागरिकों द्वारा किए गए एक शोध में पाया गया कि सबसे ज्यादा सुकून देने वाले पालतू कुत्ते होते हैं।

कुदरत को निहारें

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने 90 स्टूडेंट्स पर किए गए शोध में पाया कि कुदरत को निहारना मन को सुकून देने वाला एहसास होता है। जब हम पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को निहारते हैं तो हमारा ध्यान परेशानियों से हटकर पूरी तरह उन्हीं पर लग जाता है। इससे दिमाग को सुकून मिलता है।

फल-सब्जी ज्यादा खाएं

सोशल साइंस एंड मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित ताजातरीन स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रचुर मात्रा में फल और सब्जी खाने से खुशमिजाजी और सुकून मिलता है। इसलिए रोज कच्ची सब्जियों का सलाद और फल खाएं। सबसे बड़ी बात यह है कि अगर आप खान-पान, आराम और सोने का समय निर्धारित कर लेते हैं तो आपका हैप्पीनेस लेवल बढ़ जाता है। न्यूट्रीशन, एक्सरसाइज और रेस्ट, खुशी के मूल मंत्र हैं।

वाटर बॉडीज के पास जाएं

जर्नल आफ एनवॉयर्नमेंटल साइकोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि पानी के संग्रह स्थल नजदीक रहने से लोगों में पॉजिटिव इमोशंस का संचार होता है। स्विमिंग पूल, समुद्र या नदी के किनारे खड़े होकर पानी की हलचल को निहारना सुकून देता है। इससे स्ट्रेस लेवल भी कम होता है। *

इन पर भी करें अमल

जीवन के हर आयाम को बराबर समय देने की कोशिश करें, जैसे- परिवार, व्यापार, मित्र, जीवनसाथी, समाज आदि क्षेत्रों में सक्रिय रहें। हंसी-मजाक करें, लेकिन दूसरों का मजाक ना उड़ाएं। कई बार इससे स्थिति बिगड़ जाती है और तनाव का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा नए अनुभवों पर पैसा और समय खर्च करें। उन कार्यों को करे, जो आपने कभी नहीं किया और देखा। जैसे हॉर्स राइडिंग करना, घुड़दौड़ देखना, अंडरवाटर स्पोर्ट देखना या इसमें शामिल होना, थिएटर में जाकर नाटक देखना, किसी बर्फीले स्थान की यात्रा करना आदि।

व्यंग्य

अंशुमान खरे

गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाएं कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है।

प्रतिभा सम्मान

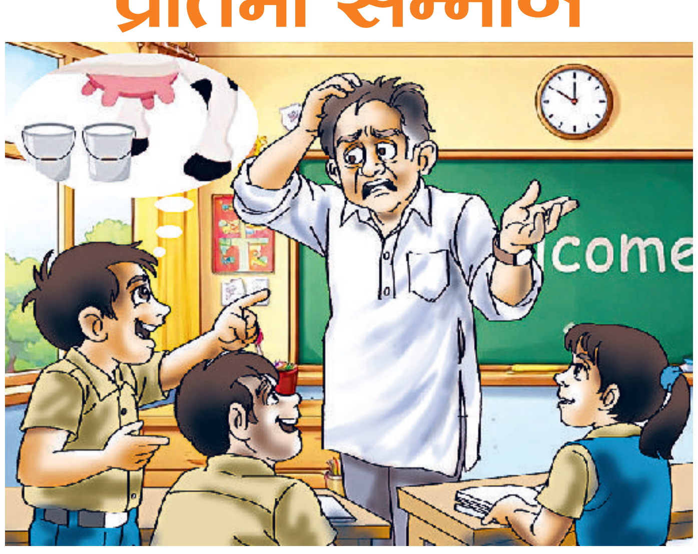

गणित में बचपन से ही हम बगैर होशियार होकर भी होशियार थे। न मालूम गणित के मास्साब कहां-कहां से सवाल लाते थे, लेकिन पिटते-पिटाते किसी तरह गणित में पास कर दिए जाते थे। घर वालों की तमन्ना डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की थी। कक्षा में हमेशा अपराधी की तरह बैठे रहते थे। गणित के गुरु जी हमेशा हमें अंतरराष्ट्रीय गणितज्ञ बनाने का मजाक करते रहते थे। पर हमें कुछ भी समझ नहीं आता। हमारे गणित के गुरु जी फिरकी लेते थे कि मुझे भगवान भी नहीं समझा सकते। गणित की क्लास हमारे लिए आफत से कम नहीं थी। मास्साब के सवाल भी माशाअल्लाह अद्भुत होते थे। एक औरत एक काम को चार घंटे में पूरा कर लेती है तो बताओ उसी काम को आठ औरतें कितने समय में पूरा करेंगी? मैं कहता, 'आठ औरतें काम तो पूरा कर नहीं पाएंगी। हां, रायता जरूर फैला देंगी।'

सवाल से सवाल निकालने की कला में हमारे मास्साब का कोई सानी नहीं था। कपड़े पर अटक गए तो उसी से जुड़े सवाल पर सवाल पूछने लगते, 'बताओ बच्चो, अगर एक साड़ी धूप में एक घंटे में सूखती है तो चार साड़ियां सूखने में कितना समय लेंगी?'

बहुत सरल सवाल सोचकर मैं हाथ उठाकर बोल पड़ा, 'वेरी सिंपल, चार घंटे।' मास्साब जवाब सुनकर आपे से बाहर हो गए। मैं समझ नहीं पा रहा था, मास्साब को सीधा-सा गुणा करना नहीं आता क्या?

मैंने हिम्मत करके एक सवाल पूछ लिया, 'गुरु जी, अगर एक गांव में एक गाय है और वह दो लीटर दूध देती है तो बताइए गांव वाले चालीस-चालीस लीटर दूध बाहर कैसे सप्लाई करते हैं?' मास्साब का माथा ठनका और तमतमा कर क्लास से बाहर चले गए। मेरा सवाल अनुत्तरित रह गया। मेरे सवाल पर क्लास में चर्चा होने लगी। सब हैरान। प्रश्न तो उचित है। मास्साब नाराज क्यों हो गए? गणित के मास्साब का वैसे भी स्कूल में काफी जलवा था। प्रधानाचार्य से लेकर सभी अध्यापक और छात्र उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। दूध की सप्लाई का सवाल गणित के मास्साब के गले की फांस बन गया। कुछ दोस्तों ने कहा, 'पानी मिला लेते होंगे।'

पर इतना पानी मिलाकर दूध रह ही नहीं पाएगा। सब पानी-पानी हो जाएगा।

मास्साब इस बात को पता लगाने में जी-जान से जुट गए कि इस प्रश्न को किसके इशारे पर उनसे पूछा गया है। यह किस अध्यापक की साजिश है, पता लगाना जरूरी है। गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाएं कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है। इस तरह के सवाल किसी किताब में नहीं होते हैं। मास्साब मेरे प्रश्न में उलझते जा रहे थे। मैं उनकी तरफ आशाभरी दृष्टि से टकटकी लगाकर धैर्य से देखता रहता था।

मेरे प्रश्न को दूर-दूर तक पहुंचाया गया। कहीं से समस्या का समाधान निकले। प्रधानाचार्य जी ने ऐसा गांव पहचाना, जहां के लोग दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध बनाने में सफल हुए हैं। उन्होंने गांव के लोगों को सम्मानित करने की योजना बनाई। गांव के प्रधान गांव को सम्मानित करने के नाम से उत्साहित दिखे। ऐसे प्रतिभाशाली लोगों की ओर सबका ध्यान खींचने के लिए मुझे भी मालाओं से लाद दिया गया। क्षेत्र के विधायक, सांसद, सभी ने गांव को सम्मानित करने में रुचि दिखाई। श्वेत क्रांति के लिए पूरे गांव के लोगों को बधाई देने वालों का तांता लग गया। शासन, प्रशासन ने भी गांव को सम्मानित करने के सुर में सुर मिला दिया। जिलाधिकारी से लेकर सारे कर्मचारी मुस्तैदी से सम्मान समारोह की तैयारी में जुट गए हैं। लेकिन मैं और गणित के मास्साब प्रश्न अनुत्तरित रहने से चिंतित हैं। हम दोनों शून्य में उत्तर खोजने की कोशिश कर रहे हैं। दुग्ध क्रांति की गुत्थी उलझती जा रही है। सुना है कि गांव के सम्मान समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री भी आएंगे और ऐसी प्रतिभाओं को सम्मानित करेंगे, जो दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध सप्लाई करने का 'हुनर' जानते हैं। *

लघुकथा / निशा भास्कर

छांव से दूर

अस्पताल जाते समय सड़क की भीड़ और अब वहां सैकड़ो की संख्या में कतारबद्ध खड़े लोगों को देखकर बाबूजी बोले, 'महानगरों के सड़कों पर दौड़ती-हांफते वाहनों के साथ, यहां का आम जीवन थरथराते हुए गुजरता है।'

'राजधानी में अच्छी सुविधा मिलेगी, यह सोचकर सभी राज्यों से लोग आकर यहां बसना चाहते हैं और बसते भी हैं, इसलिए भीड़ तो होगी ही।' बाबूजी की ओर देखकर मयंक धीरे से बोला। बाबूजी बड़ी मुश्किल से इलाज के लिए अपना घर और गांव छोड़कर अपने बेटे मयंक के पास इस महानगर में आए थे। कहीं बाबूजी गांव वापस जाने की जिद्द न करने लग जाएं, यह ख्याल आते ही मयंक बोला, 'बाबूजी एक बार आपका अच्छी तरह से इलाज हो जाए बस और हमें क्या चाहिए!' 'अरे बेटा! मुझे लगता है यहां तो हम और भी बीमार हो जाएंगे। स्वस्थ क्या खाक होंगे?' कहकर वे तेज-तेज खांसने लगे। उनकी आंखें भी लाल हो गईं। मयंक ने घबराकर इधर-उधर देखा। अस्पताल का प्रतीक्षालय पूरी तरह से भरा हुआ था। एक भी सीट खाली नहीं थी, जहां बाबूजी को वह बैठा सके। एक व्यक्ति जो उसी की तरह दिख रहा था। मयंक ने उसे आग्रहपूर्ण नजरों से देखा। उस व्यक्ति ने खड़े होकर बाबूजी को बिठाने का इशारा किया। मयंक ने बाबूजी को बिठाया और दोनों हाथ जोड़कर उस व्यक्ति का आभार व्यक्त किया और बाबूजी से बोला, 'मैं अभी आया।' फिर वह शीघ्रता से अस्पताल से बाहर निकल गया। थोड़ी ही देर में पानी की बोतल लेकर आया और बाबूजी को पानी पिलाकर बोला, 'आप चिंता न करें, हम जिस डॉक्टर से दिखाने के लिए आए हैं, उनका बहुत नाम है। उनके इलाज से कितना भी पुराना रोग, ठीक हो जाता है।' बाबूजी, बेटे की बात सुनकर बोले, 'अरे! यह तो बुढ़ापे का रोग है। खांसना-खंखारना तो लक्षण है, बुढ़ापे का। लेकिन बेटा, मेरी एक बात ध्यान से सुन, यह शहर बड़ा है, डॉक्टर बड़ा है पर हम तो बड़े लोग नहीं हैं न! बड़ा शहर और इसकी सुविधाएं बड़े लोगों के लिए होती हैं। हम इनके फोटो देखकर अपने से झूठ बोलते हैं कि मैं भी इसका हिस्सा हूं। पर हमारी इतनी औकात नहीं है।' मयंक की आंखें गीली हो गईं। वह बोला, 'सच कह रहे हैं बाबूजी! बीस साल की नौकरी में क्या ही कर लिया मैंने? आज तक बीवी बच्चों को इस शहर में एक छत भी न दे सका।' बेटे को इस तरह उदास देखकर बाबूजी उसके सिर पर हाथ रखकर बोले, 'बेटा हम अपने गांव चलेंगे। वहीं के अंग्रेजी स्कूल में मेरी पोती पढ़ेगी और मैं अपने बड़े से आंगन में नीम की छांव तले बैठकर उसके साथ खेलूंगा और' तभी नर्स ने टोकन नंबर बहत्तर रामजस को आवाज दी। मयंक बाबूजी का हाथ थाम कर बोला, 'चलिए बाबूजी, अपना नंबर आ गया।' *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

अलग मिजाज की कहानियां

वरिष्ठ कथाकार हबीब कैफी की चुनी हुई सत्रह कहानियां 'तमन्ना खानम' पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। करीब साढ़े पांच दशक के कालखंड में लिखी गई ये कहानियां, हमें समाज के अलग-अलग तबके से ताल्लुक रखने वाली स्त्रियों की जिंदगी से रूबरू कराती हैं। कहीं पुरुषत्व के दंभ से दमित लेकिन फिर भी उसके साथ रहने को विवश भंवरी नजर आती है (औरत), तो कहीं गणिकाओं के जीवन की त्रासदी भोगती मरजीना की कराह सुनाई पड़ती है (मरजीना)। 'तमन्ना खानम' कहानी में उच्च वर्ग की महिला तमन्ना को अपनी जिंदगी की पेचीदगियों को अपने अंदाज में सुलझाते देखा जा सकता है। बहुत अलग मिजाज की ये कहानियां, कहीं-कहीं उर्दू के मशहूर कथाकार मंटो की याद दिलाती हैं। इन कहानियों में भाषा की रवानगी भी देखने लायक है। *

पुस्तक: तमन्ना खानम (कहानी संग्रह), **लेखक:** हबीब कैफी, **मूल्य:** 299 रुपए, **प्रकाशक:** कौटिल्य बुक्स, नई दिल्ली

जरा सोचिए, प्रकृति और जीवन में रंग और सुगंध न हों तो यह दुनिया कितनी नीरस हो जाएगी। ये फूल ही तो हैं, जो हमारी दुनिया को रंगीन बनाते हैं, खुशबू से महकाते हैं। वासंती मौसम में तो बाग-बगीचों में फूलों की बहार ही आ जाती है। ऐसे में आइए, बात करें फूलों की...

वासंती मौसम में बात फूलों की

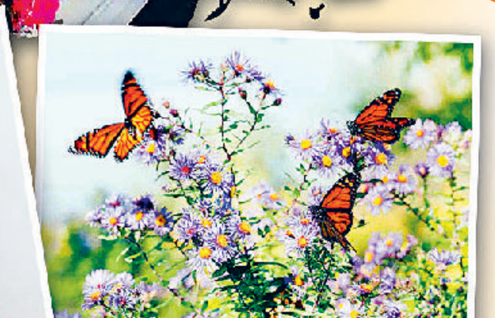

प्रकृति

शिखर चंद जैन

हर ऋतु में प्रकृति हमारे लिए कई बेशकीमती सौगातें लेकर आती है। प्रकृति की इन सौगातों में कुछ बेहद खूबसूरत फूल भी शामिल हैं। फूलों की यह मनमोहक दुनिया, हमें एहसास कराती है कि जीवन में रंग और खुशबू का कितना महत्व है। हर फूल अपनी जगह खास है, चाहे वह सड़क किनारे खिला छोटा-सा अनाम फूल हो या किसी बगीचे में खिला राजसी गुलाब। अगली बार जब आप किसी फूल को देखें, तो रुककर उसकी मोहक बनावट, उसकी सुगंध के बारे में जरूर सोचें। इन्हें जितना गौर से, प्यार से देखेंगे आपको इनसे उतना ही ज्यादा लगाव हो जाएगा।

संभालें नाजुक फूलों को: फूल हमारी धरती को खूबसूरती तो प्रदान करते ही हैं। इसके अलावा कई कीट-पतंगों को अपना रस, कई औषधीय लाभ और हमें खुशी का अहसास भी कराते हैं। ये मधुमक्खियों और तितलियों को आकर्षित करते हैं, जिससे परागण होता है। इससे पौधे बीज बना पाते हैं और नए पौधे उगते हैं। इस तरह फूल हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम उनकी रक्षा करें। ज्यादा कुछ नहीं तो इतना तो कर ही सकते हैं कि हम बिना कारण फूलों को न तोड़ें। जब हम फूल तोड़ते हैं, तो वह पर्याप्त मात्रा में बीज नहीं बना पाते और नए पौधे नहीं उग पाते हैं। फूलों की हिफाजत की शुरुआत अपने घर से करें। घर के गमलों में लगे फूलों वाले पौधों को नियमित तौर पर पानी दें और उन्हें कुछ समय के लिए सूरज की रोशनी में भी रखें। तितलियों, मधुमक्खियों और भौंरों को फूलों पर बैठकर उनका रस चूसने दें। उन्हें भगाने का प्रयास न करें। न भूलें कि इससे उन कीटों को भोजन तो मिलता ही है, उस फूल वाले पौधे का परागण भी होता है। प्रकृति का सम्मान करें और अधिक से अधिक फूलों के पौधे लगाएं ताकि हमारे आस-पास हमेशा फूल महकते रहें।

बात भी करते हैं फूल: फूलों की मूल भाषा सुगंध होती है। ये हम मनुष्यों से अपनी मादक महक के माध्यम से बतियाते हैं। खुशबू से वे अपनी उपस्थिति का एहसास कराते हैं। हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सभी फूल अपनी अलग-अलग खुशबू फैलाते हैं। कुछ मधुमक्खियों और तितलियों को बुलाने के लिए और कुछ कीड़े-मकोड़ों को दूर भगाने के लिए। वैसे फूलों के पौधों समेत सभी पौधे, अपनी जड़ों और फंगस के नेटवर्क के जरिए भी एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और पोषक तत्वों या पानी की कमी जैसी जानकारी साझा करते हैं। साथ ही हवा में रसायन छोड़कर भी वे संवाद करते हैं। जब किसी पौधे पर हानिकारक कीट हमला करते हैं तो वह हवा में कुछ रसायन छोड़ते हैं, जिसे आस-पास के दूसरे पौधे महसूस कर लेते हैं और अपनी सुरक्षा के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रसिद्ध भारतीय वनस्पति विज्ञानी सर जगदीश चंद्र बोस ने बताया था कि पौधे इलेक्ट्रिक सिग्नल्स के जरिए भी संवाद करते हैं।

हमें इसलिए भाते हैं फूल: फूल हमें इसलिए अच्छे लगते हैं, क्योंकि उनके सुंदर रंग, मनमोहक सुगंध और आकर्षक बनावट हमारे दिमाग में खुशी के हार्मोन (डोपामाइन और सेरोटोनिन) पैदा करते हैं, जिससे हमें शांति और ताजगी महसूस होती है। फूल प्रकृति की सुंदरता, जीवन की सरसता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माने जाते हैं। इतना ही नहीं, ये दवा के रूप में भी महत्वपूर्ण होते हैं। पौराणिक काल में किसी स्थान पर फूलों की मौजूदगी इंसानों को यह संकेत देती थी कि आस-पास पानी, पोषक तत्व और भोजन (फल) उपलब्ध है। यही वजह है कि मानव सभ्यता के विकास से ही फूलों से हमारा गहरा जुड़ाव रहा है। फूलों के चटक, खुशबूदार रंग, इनकी मुलायमियत और सिमेट्रिकल बनावट आंखों को बहुत आकर्षित करती हैं।

कम नहीं सांस्कृतिक-प्राकृतिक महत्व: फूलों का सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व भी है। ये खुशी, प्रेम, सम्मान और उत्सव के प्रतीक माने जाते हैं, इसलिए जन्मदिन, शादियों और अन्य शुभ अवसरों पर फूलों को बुके, माला, गुच्छ के रूप में भेंट किया जाता है। वास्तु और ज्योतिष के अनुसार, फूल घर में सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं और नकारात्मकता को दूर करते हैं, जिससे खुशहाली आती है।*

आर्थिक लाभ भी कराते हैं फूल

फूलों को पसंद किए जाने की एक वजह यह भी है कि ये लाखों लोगों को आर्थिक लाभ भी कराते हैं। कोई फूल उगा कर, कोई इन्हें बेच कर, कोई सजा कर, कोई निर्यात करके और कोई इनसे सजावटी सामान, मालाएं और बुके आदि बनाकर धनार्जन करता है। भारत में फूलों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है, जिसका बाजार 2022 में लगभग 23,000 करोड़ रुपए का था और 2028 तक 46,700 करोड़ रुपए तक पहुंचने की उम्मीद है। बेंगलुरु, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल प्रमुख पुष्प उत्पादक राज्य हैं। गुलाब, गेंदा, रजनीगंधा और ऑर्किड जैसे फूलों की मांग दुनिया भर में सबसे अधिक है। भारत के फूल संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, नाइजीरिया सहित कई देशों में भी भेजे जाते हैं।

सफलता के लिए जानना है जरूरी
आप क्या नहीं करना चाहते

करियर फील्ड कोई भी हो, उसमें सफल होने के लिए आपका फोकस्ड होना सबसे जरूरी है। फोकस्ड होने के लिए यह जानना जितना जरूरी है कि आपको क्या-क्या करना है, उतना ही जरूरी यह भी होता है कि क्या-क्या नहीं करना चाहते हैं?

सेल्फ मोटिवेशन

कीर्तिशेखर

कई बार जीवन में 'हां' से ज्यादा जरूरी और ताकतवर होता है, 'नहीं'। विशेषकर करियर में सफल होने के लिए अगर शुरू से ही हमें यह पता हो कि हम क्या नहीं बनना चाहते, तो बहुत फायदा होता है।

क्या कहती हैं स्टडीज: करियर में सक्सेस के संबंध में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में हुए एक शोध के मुताबिक 60 फीसदी से ज्यादा लोग ऐसे कामों में लगे होते हैं, जिन्हें वो करना पसंद नहीं करते, मगर जोखिम न उठाने के चलते वो ऐसे काम जीवनभर करते रहते हैं। इसके साथ ही एक दूसरा जबर्दस्त शोध इस विषय पर हुआ है कि दुनिया में जितने सफल लोग हैं, उसमें 90 फीसदी से ज्यादा ऐसे हैं, जो उस काम को कर रहे हैं, जिसे वह करना चाहते थे। जी हां, जब हम कोई ऐसा काम करते हैं, जो हमारा मनपसंद होता है, उसमें सफल होने के चांस 10-20 फीसदी नहीं पूरे 100 फीसदी ज्यादा होते हैं। इसलिए सफलता की असली नींव क्या करना है, से नहीं बल्कि क्या नहीं करना है, से पड़ती है। जिस दिन हम यह समझ लेते हैं कि हम जीवन में क्या नहीं करना चाहते, उसी समय हमारे करने वाले कामों की लिस्ट बिल्कुल साफ और सफलता की उम्मीद बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है।

'नहीं' क्यों जरूरी है: हम अकसर यह मानकर चलते हैं कि हां कहना सकारात्मक होता है और नहीं कहना नकारात्मक। लेकिन बात अगर स्पष्ट रूप से जिंदगी में करियर की दिशा चुनने की हो तो न कहना ज्यादा सकारात्मक होता है बजाय हर काम के लिए हां कर देने के। 'हां' कहना जितना आसान होता है, उसका नुकसान उतना ही बड़ा होता है। इसलिए जो काम न करना चाहते हों, उसे करने के आसान विकल्प मिलें तो बेहतर है 'नहीं' करना सीखें।

सफलता का पहला स्टेप: सफल लोग पहले यह तय करते हैं कि उन्हें क्या नहीं करना। इसलिए वे कुछ बातों को अमल में लाते ही हैं।

- हर काम और हर मौके पर कूद नहीं पड़ते।
- हर चमकदार विकल्प में नहीं फंसते।
- वे हर सलाह को आदेश नहीं मानते।
- सुनते सबकी हैं, लेकिन करते हैं, जो उनके मन में चल रहा होता है। यानी जो उन्हें सही लगता है।
- ऐसे लोग हर अपेक्षा को अपने सिर पर नहीं ढोते हैं।

दरअसल, सफलता का दर्शन दुनिया में कई नामों से जाना जाता है जैसे- फोकस, प्राथमिकता, सीमाएं और आत्मनियंत्रण। लेकिन सबका मूल एक ही है। आखिर मैं क्या करना चाहता हूं और क्या नहीं करना चाहता हूं?

इसलिए नहीं कहने से डरते हैं लोग: नहीं कहने से ज्यादातर लोग इसलिए डरते हैं, क्योंकि न कहना गैरसामाजिक माना जाता है। न कहने में एक किस्म की बगावत, विरोध होता है। इसलिए लोग न कहने से बचते हैं। लेकिन बचना वास्तव में 'बचना' नहीं होता। अगर न कहने से आप बचते हैं तो आखिरकार उसी न में फंस भी जाते हैं। इसलिए जब करियर के बारे में गंभीरता से सोचें तो अपनी सबसे पहली और जरूरी लिस्ट यह बनाएं कि आप क्या-क्या नहीं करना चाहते हैं? अगर समय रहते आपमें यह स्पष्टता नहीं आई तो एक दिन आपको मजबूर होकर 'नहीं' खुद सिखा देगी। मसलन, मानसिक तनाव के जरिए, असफलता के चलते या पछतावे के रूप में। क्योंकि जो काम आप नहीं करना चाहते और फिर भी करते हैं, तो कीमत तो चुकानी ही पड़ती है। इसलिए बाद में कोई कीमत चुकाने से बेहतर पहले ही चुका लें, क्योंकि शुरुआत में यह सबसे छोटी होती है।

सफलता दिलाएंगे इन्हें 'नहीं' कहना: जिस दिन आप यह तय कर लेते हैं कि मैं अपनी तुलना 'नहीं' करूंगा, उसी दिन आप अपनी प्रतिभा से असफल होने से बच जाते हैं। तुलना सफलता से दूर करती है। सोशल मीडिया के दौर में तो तुलना एक धीमा जहर बन चुकी है।

खुद को हर जगह साबित 'नहीं' करने का निर्णय भी कारगर है। दरअसल, हर जगह अपनी काबिलियत दिखाने की कोई जरूरत नहीं होती, क्योंकि सभी जगहें आपकी सफलता नहीं तय करती हैं। इसलिए अपनी काबिलियत वहीं दिखाइए, जहां वाकई उसकी जरूरत है। लोग क्या कहेंगे, इस डर से अनचाहा फैसला 'नहीं' करना भी जरूरी है। जिस दिन आप फैसले लेने में 'लोग क्या कहेंगे' को माइनस कर लेते हैं तो आपके सारे फैसले सही होने लगते हैं। आजकल एक धारणा बन चुकी है, जो व्यस्त है, वही सफल है। जिस दिन आप इस भेड़चाल को मानने से इनकार कर देंगे, उस दिन से सफलता आपके कदम चूमेगी। रिश्ता भी वही स्वस्थ होता है, जिसमें सम्मान हो और जिसे याद करते हुए भी खुशी हो। जिस रिश्ते को याद करके खुशी न हो, उसे तोड़ना ही बेहतर होता है।*

निवेश, बचत और फाइनेंस से संबंधित अन्य कई पहलुओं को लेकर अकसर लोग असमंजस या भ्रम की स्थिति में रहते हैं। एक सुरक्षित वित्तीय भविष्य के लिए जरूरी है कि आप वित्त से संबंधित इन मिथ और फैक्ट को अच्छी तरह जानें-समझें।

समृद्ध जीवन के लिए समझें
फाइनेंस से जुड़े मिथ-फैक्ट

सजेशन

अंजू जैन

हमारे मन में पैसों को लेकर पारंपरिक तौर पर कई ऐसी धारणाएं बैठा दी गई हैं, जो भ्रम होती हैं। घर की फाइनेंसियल कंडीशन अच्छी रखने के लिए ऐसे भ्रमों और उनसे जुड़े सच के बारे में जानना जरूरी है। इससे आप सुखी और समृद्ध रहेंगे।

मिथ: अगर आपकी इनकम ज्यादा है तो आप अमीर हो ही जाएंगे।

फैक्ट: अमीर होना सिर्फ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर करता है कि आप कितना बचाते हैं और कितनी समझदारी से निवेश करते हैं। मार्गन हाउसेल अपनी किताब 'द साइकोलॉजी ऑफ मनी' में लिखते हैं कि असली धन वह है, जो लोगों को सामने दिखाई नहीं देता बल्कि जिसे आपने अच्छी जगह निवेश कर रखा है। जैसे जमीन-जायदाद, शेयर, सोना, चांदी, एफडी, म्यूचुअल फंड आदि।

मिथ: घर खरीदना हमेशा ही एक बेहतरीन संपत्ति मानी जाती है।

फैक्ट: नहीं, अगर घर का मेंटेनेंस बहुत ज्यादा है, आपके कार्यस्थल से दूर है, डेली शॉपिंग की सुविधा नजदीक नहीं है या इसकी रीसेल वैल्यू बढ़ने वाली नहीं है तो आपके लिए यह नुकसानदायक ही होगा। रॉबर्ट कियासाकी अपनी पुस्तक 'रिच डैड-पुअर डैड' में बताते हैं कि अगर आपका घर आपकी जेब से विभिन्न मदों में पैसा निकाल रहा है तो वह एक लायबिलिटी है, एसेट नहीं। एसेट वह है, जो आपकी जेब में पैसा डाले।

मिथ: निवेश करने के लिए बहुत सारे पैसों की जरूरत होती है।

फैक्ट: निवेश के लिए इसकी आदत और खर्च पर नियंत्रण जरूरी होता है। पुस्तक 'द रिचेस्ट मैन इन बेबीलोन' के अनुसार, अपनी कमाई का कम से कम 10 प्रतिशत हिस्सा खुद के लिए बचाकर निवेश की शुरुआत करना ही सबसे बड़ी रणनीति है। 'कंपाउंडिंग' की शक्ति कम पैसों से भी बड़ा फंड बना सकती है।

मिथ: कर्ज हमेशा नुकसानदायक ही होता है।

फैक्ट: विशेषज्ञ 'अच्छे कर्ज' और 'बुरे कर्ज' में फर्क बताते हैं। अगर कर्ज का उपयोग ऐसी चीज खरीदने के लिए किया जाए, जिसकी वैल्यू बढ़े या जो आय पैदा करे (जैसे बिजनेस लोन), तो वह अच्छा कर्ज है। लेकिन लग्जरी, झूठे दिखावे और फिजूल चीजों के लिए कर्ज लेना गलत है।

मिथ: ज्यादा जोखिम मतलब ज्यादा मुनाफा।

फैक्ट: बिल्कुल नहीं। सफल निवेशक हमेशा जोखिम कम करने पर ध्यान देते हैं। बेंजामिन ग्राहम की पुस्तक 'द इंटेलिजेंट इंवेस्टर' सिखाती है कि अपनी पूंजी की सुरक्षा का ख्याल रखना और सोच-समझकर निवेश का विविधीकरण करना ही असली समझदारी है।

मिथ: रिटायरमेंट का मतलब 'काम बंद और पूरा आराम करना' है।

फैक्ट: हमेशा याद रखें कि खाली दिमाग शैतान का घर होता है। बिना किसी काम के शरीर और दिमाग को जंग लग जाती है। इससे दिमाग परेशानियों और बीमारियों में उलझ जाता है। बेहतर होगा कि रिटायर होने के बाद पसंदीदा काम करें और उससे चार पैसा कमाने की सोचें। टिम फेरिस की पुस्तक 'द 4-आवर वर्कवीक' के अनुसार, वित्तीय स्वतंत्रता का मतलब काम छोड़ना नहीं, बल्कि पसंद का काम करने की आजादी होना है।

मिथ: बजट बनाना खुद पर पाबंदी लगाना है।

फैक्ट: बजट आपको यह नहीं बताता कि आप क्या नहीं कर सकते, बल्कि यह तय करता है कि आपका पैसा कहां जाना चाहिए? यह आपको फिजूलखर्ची से बचाकर आर्थिक आजादी की ओर ले जाता है।

मिथ: अमीर लोग अकसर कंजूस होते हैं।

फैक्ट: अमीर लोग समझदार होते हैं, सोच-समझकर खर्च करते हैं और अपनी इसी आदत के कारण वे अमीर बनते हैं। थॉमस जे. स्टेनली की पुस्तक 'द मिलिनेयर नेक्स्ट डोर' के अनुसार, ज्यादातर करोड़पति साधारण जीवन जीते हैं। वे 'दिखावे' पर नहीं बल्कि 'वित्तीय स्वतंत्रता' पर खर्च करते हैं।

मिथ: पैसा ही सारी बुराइयों की जड़ है।

फैक्ट: यह एक बहुत पुराना भ्रम है। असल में पैसा नहीं 'पैसे का लालच' समस्याओं की जड़ है। पैसा अपने आप में केवल एक जरिया यानी टूल है, जो आपके पास मौजूद संसाधनों को बढ़ाने की क्षमता रखता है।

मिथ: निवेश के लिए मार्केट को 'टाइम' करना (सही समय का इंतजार) जरूरी है।

फैक्ट: 'टाइम इन द मार्केट' (बाजार में समय बिताना) 'टाइमिंग द मार्केट' (बाजार का सही समय चुनना) से कहीं ज्यादा शक्तिशाली है। नियमित रूप से निवेश करना (जैसे एस आई पी के जरिए) और धैर्य रखना ही धन सृजन का सबसे विश्वसनीय तरीका है। शेयर बाजार में 'कब' निवेश करना है, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि आप 'कितने समय' तक निवेशित रहते हैं, क्योंकि निरंतरता ही वेल्थ क्रिएशन की असली कुंजी है। बाजार में अधिक समय बिताने से लंबी अवधि में चक्रवृद्धि ब्याज और धैर्य के कारण बेहतर रिटर्न मिलता है, जो पोर्टफोलियो को बढ़ने का मौका देता है।*

(वित्तीय सलाहकार प्रदीप अग्रवाल और चार्टर्ड अकाउंटेंट शुभम तोदी से बातचीत पर आधारित)

बॉलीवुड ट्रेंड

डी. जे. नंदन

'हम दोनों' का गीत 'अभी न जाओ..'

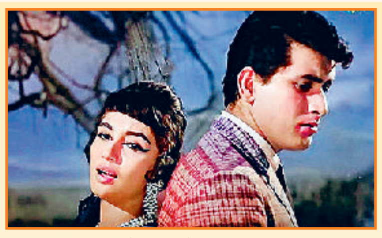

'वो कौन थी' का गीत 'लग जा गले..'

अब क्यों नहीं बन पाते
रूहानी सुकून देते गीत

पुराने फिल्मी गीतों को आज भी सुनें, तो ऐसा लगता है मानो किसी ने कानों में मिश्री घोल दी हो। ठहराव और सकून से भरे ये गीत सीधे रूह में उतरते हैं। आज ऐसे गीत कम ही बनते हैं। बॉलीवुड सॉन्ग्स के इस बदले हुए ट्रेंड पर एक नजर।

कई फिल्मी गीत ऐसे होते हैं, जो सीधे दिल में उतरते हैं। बीते दौर के सदाबहार गीतों पर यह बात पूरी तरह लागू होती है। ये गाने सुनने के दौरान ही नहीं बल्कि उसके बाद भी देर तक दिलो-दिमाग में गूंजते रहते हैं। अब ऐसे गीत कम ही बनते हैं। आज ऐसे गीत कम इसलिए नहीं हैं कि प्रतिभा खत्म हो गई है, बल्कि इसलिए कि दिल तक पहुंचने का रास्ता बदल गया है और यह छोटा भी कर दिया गया है। अगर हम आज के बॉलीवुड गीत-संगीत को ध्यान से सुनें, तो साफ पता चलता है कि मंद्र सप्तक यानी नीचे सुर में गाए गए, ठहरे हुए, भावप्रधान और गहराई वाले गीत अब अपवाद बनते जा रहे हैं।

सदाबहार गीतों का दौर: बीते दौर के गीतों को सुनते हुए एक सुकून, एक ठहराव-सा महसूस होता है। मसलन, फिल्म 'वो कौन थी' के इस गीत पर गौर करें, 'लग जा गले...'(स्वर-लता मंगेशकर, संगीत-मदन मोहन) यह गीत सुकून की पराकाष्ठा पर पहुंचाता है। आवाज में न कोई जल्दबाजी है, न दिखावा। बस एक अंतिम आग्रह, जो सरगोशी में भी अमर हो गया। इसी तरह फिल्म 'अमर प्रेम' का 'चिंगारी कोई भड़के...'(स्वर-किशोर कुमार, संगीत-आर. डी. बर्मन), किशोर कुमार का यह गीत यह साबित करता है कि मध्यम और नीचा सुर कमजोरी नहीं, गीत की ताकत भी होती है। 'अभी न जाओ छोड़कर...'(फिल्म 'हम दोनों', स्वर-मोहम्मद रफी और आशा भोसले, संगीत-जयदेव) गीत को सुनें तो इस गीत में संवाद है, आग्रह है और प्रेम का सभ्य ठहराव है। सुर इतने संयमित हैं कि आज भी इस गीत को सुनते हुए लोग इसमें खो जाते हैं। ऐसे ही 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए...' (फिल्म 'आनंद', स्वर-मुकेश, संगीत- सलिल चौधरी) गीत दिन और जीवन- दोनों के ढलने का संगीतात्मक रूपक है। और इसी तरह 'वो शाम कुछ अजीब थी..' (फिल्म 'खामोशी', स्वर-किशोर कुमार, संगीत- हेमंत कुमार) गीत में सुर सिर्फ चलते ही नहीं, ठहरते भी हैं। यही ठहराव इस गीत की आत्मा है।

'अमर प्रेम' का गीत 'चिंगारी कोई भड़के'

क्यों कम बन रहे ऐसे गीत: सवाल यह है कि आज के समय में बीते दौर की तरह सुकूनदायक, रूहानी और ठहराव भरे गीत क्यों नहीं बनते? खोजने पर इसके कई कारण निकलकर सामने आते हैं। जैसे-आज के गीत 'सुनाई देने' के लिए बनाए जाते हैं, 'महसूस होने' के लिए नहीं। तेज बीट्स और ऊंचे सुर तुरंत ध्यान खींचते हैं, जबकि नीचे सुर धीरे और स्थायी असर करते हैं। आज की फास्ट लाइफ, मोबाइल स्पीकर, रील्स और जिम प्लेलिस्ट को ध्यान में रखकर बनाए जा रहे गीतों में वो सुकून, वो ठहराव महसूस करना मुश्किल है। आज के समय में म्यूजिक कंपनियां चाहती हैं पहले 10 सेकेंड में ही हिट और व्यूज मिल जाए। नीचे सुर वाला गीत धीरे खुलता है, इसलिए उसे आज के दौर में 'रिस्की' माना जाता है।

वॉल्यूम-बीट्स को महत्व: बीते दौर में गायक फिल्म के किरदार से पहले गीत के भाव खोजते थे। आज के अधिकतर गाने में एक्टर और उसकी स्क्रीन इमेज का पहले ध्यान रखा जाता है। इस प्रयास में कई बार गायकी पर वॉल्यूम और बीट्स भारी पड़ जाते हैं।

शास्त्रीय प्रशिक्षण की कमी: नीचे और मध्यम सुर में गाना आसान नहीं होता। इसके लिए रियाज, सांस पर नियंत्रण और धैर्य चाहिए होता है, जो आज के गायकों में कम होता जा रहा है।

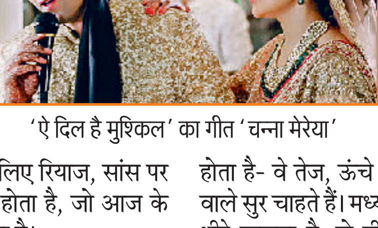

'ऐ दिल है मुश्किल' का गीत 'चन्ना मेरेया'

कभी-कभार सुनाई पड़ते हैं मधुर गीत: अच्छे, मधुर गीत भले ही आज फिल्म संगीत के हाशिए पर चले गए हैं, लेकिन ये पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं। आज भी कुछ मधुर गीत बन रहे हैं, जो बिना शोर किए दिल में उतर जाते हैं। उदाहरण के तौर पर हम आज के दौर के कुछ बेहतरीन सीधे रूह में उतरने वाले गीतों को देख सकते हैं- फिल्म 'तमाशा' के गीत 'अगर तुम साथ हो..' (गायक-अरिजीत सिंह और अलका याग्निक, संगीत- ए. आर. रहमान) गीत आज के दौर में मधुर गीत की सबसे सशक्त वापसी है। अलका याग्निक की आवाज पुराने दौर की गंभीरता लौटाती है, जबकि अरिजीत का संयम गीत को समकालीन बनाता है। इसी तरह फिल्म 'ऐ दिल है मुश्किल' के गीत 'चन्ना मेरेया..' (गायक-अरिजीत सिंह, संगीत- प्रीतम) का मुखड़ा भले ही ऊंचाई छूता हो, लेकिन गीत का अंतरा और भावात्मक आधार नीचे सुर में ही बैठे हैं। यह गीत इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि कम ही सही लेकिन आज भी नीचे सुर के भावप्रवण गीत लोगों को खूब भाते तो हैं ही, फिल्म मेकर्स को व्यावसायिक सफलता भी दिलवा सकते हैं।

बाजार का है दबाव: आज का संगीत उद्योग जिनके हिसाब से चलता है, उनमें से बड़ी संख्या रील देखने वाले युवाओं की है। पहले 10 सेकेंड में रुकने या स्क्रॉल करने वाले श्रोता और दर्शक, जिनकी पसंद पर पैसा, प्रमोशन और ट्रेंड तय होता है- वे तेज, ऊंचे और तुरंत पकड़ में आने वाले सुर चाहते हैं। मध्यम और नीचे सुर का गीत धीरे खुलता है, दो-तीन बार सुनने पर असर करता है, अकेलापन और ठहराव की मांग करता है। आज के संगीत प्रेमियों और इंडस्ट्री को गायक से ज्यादा परफॉर्मर चाहिए। लाइव शो, डांस, स्क्रीन प्रेजेंस भी मायने रखता है। इन्हीं सब पहलुओं को ध्यान में रखकर आज के गीत-संगीत को रचा जाता है। देखा जाए, तो मामला सीधा-सीधा प्रोफेशनल प्रेशर के साथ ही 'डिमांड एंड सप्लाई' का माना जा सकता है।*